अंक 7 व 8

1997

चैतन्य लहरी

" निःसंदेह सहज योग बढ़ेगा, पर उसे योजनाबद्ध मत कीजिए! योजनाबद्धता आरम्भ करते ही बढ़ोतरी रुक जाएगी, बिल्कुल उसी तरह से जैसे काट–छाँट कर सुव्यवस्थित (आयोजित) करने से पेड़ छोटा (बौना) हो जाता है "

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

विषय सूची

इस अंक में

सम्पादकीय	3
गुरु पूजा –1997	4
श्री कृष्ण के 108 नाम	15
ईसा मसीह पूजा–1996	18
पूजा के विषय में श्री माता जी का परामर्श	26

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन का कोई भी अंश, प्रकाशक की अनुमति लिए बिना, किसी भी रूप में अथवा किसी भी जरिये से कहीं उद्धृत अथवा सम्प्रेषित न किया जाए। जो भी व्यक्ति इस प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करेगा उसके विरुद्ध दंडात्मक अभियोजन तथा क्षतिपूर्ति के लिए दीवानी दावा दायर किया जा सकता है।

प्रकाशक :
निर्मल ट्रान्सफॉर्मेशन प्राइवेट लिमिटेड,
8, चंद्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
कोथरुड, पौढ़ रोड, पुणे 411038
'ई' मेल का पता–
marketing@nirmalinfosys.com
वेबसाइट: www.nirmalinfosys.com
Tel. 9120 25286537. Fax. 9120 25286722

सम्पादकीय

समस्याएँ जीवन का अंग हैं, परन्तु प्रश्न यह है कि एक सहजयोगी इनका सामना किस प्रकार करता है, किस प्रकार वह इन से निपटता है ? आपात स्थिति में पहली प्रतिक्रिया जो होती है वह है घबराहट। अतः शान्त होकर सन्तुलन को पुनः प्राप्त करना प्रथम आवश्यकता है। अपना बायां हाथ श्रीमाताजी के फोटो की ओर करके ओर दायां हाथ अपने हृदय पर रखकर श्री जगदम्बा का मन्त्र उच्चारण करते हुए अपने मध्य हृदय को तुरन्त शक्ति पहुँचाये। तदोपरान्त ध्यान में उतरें तथा स्थिति से ऊपर उठने का प्रयास करें। आपके निर्विचारसमाधि तक पहुँचते ही समाधान आ जायेगा। **समाधान सदैव विद्यमान होता है परन्तु समस्या में बहुत अधिक उलझे होने के कारण हमारी दृष्टि इस पर नहीं पड़ती।**

प्रतिदिन ध्यान–धारणा का अभ्यास हमें साक्षी अवस्था तक लाता है, जहाँ विचार आते हैं और जाते हैं, समस्यायें आती हैं और जाती हैं परन्तु 'साक्षी' इनसे प्रभावित नहीं होता। जो भी होता रहे साधक निर्लिप्त–साक्षी बना रहता है। उस अवस्था में समाधान मिल जाता है तथा स्थिति स्वतः ही ठीक हो जाती है। इस प्रकार सहजयोगी न केवल समाधान खोजना जानता है परन्तु वह अन्य लोगों की समस्याओं के समाधान खोजने में भी सहायक होता है।

गुरु पूजा –1997

4

कबेला–इटली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज की पूजा हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आप सबको आत्मसाक्षात्कार मिल चुका है। आप सबके पास अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने के लिए आवश्यक ज्ञान भी है जो आप प्राप्त कर चुके हैं। उसके विषय में आपको जानना है। ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि अगर आप इस ज्ञान का उपयोग नहीं करते और अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार नहीं देते तो आपको स्वयं पर विश्वास नहीं होगा। आपमें आत्मसम्मान भी नहीं जागेगा। दूसरी बात यह है कि आप अन्य लोगों को चैतन्य तो दें परन्तु उनसे लिप्त न हों। मैंने देखा है कि कुछ लोग बहुत अधिक लिप्त हो जाते हैं। एक व्यक्ति को साक्षात्कार देकर वे समझते हैं कि उन्होंने बहुत महान काम कर दिया है। वे उस व्यक्ति पर, उसके परिवार पर, उसके सम्बंधियों पर कार्य करने लगते हैं। अब तक तो आप जान गये होंगे कि व्यक्ति के किसी से सम्बंधित होने या समीप होने का अर्थ ये नहीं है कि उसे भी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने का उतना ही अवसर मिल जाए।

सामूहिक होना गहनता प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है। इसके सिवाय कोई अन्य उपाय नहीं। लोग यदि ये सोचें कि आश्रमों से दूर कहीं अकेले रहकर वे बहुत अधिक प्राप्त कर लेंगे तो सहजयोग में ऐसा नहीं होता। प्राचीन काल में लोग हिमालय में चले जाते थे, अलग–अलग तपस्या करते थे, परन्तु उनमें से कोई एक–दो ही आध्यात्मिक उत्थान के लिये चुने जाते थे। यहाँ पर आध्यात्मिक उत्थान का प्रश्न नहीं है, यहाँ तो सामूहिक उत्थान का प्रश्न है। इस प्रकार आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो सामूहिक है, सामूहिकता का आनन्द लेता है, सामूहिकता के साथ कार्य करता है और सामूहिकता में रहता है। ऐसे व्यक्ति में नई प्रकार की शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं। ये शक्तियाँ अत्यन्त सूक्ष्म होती है, इतनी सूक्ष्म कि किसी भी अणु, परमाणु या मानव में प्रवेश कर सकती हैं। यह प्रवेश भी तभी सम्भव है जब आप स्वभाव से सामूहिक हों। बिना सामूहिक हुए आप वे ऊँचाईयाँ प्राप्त नहीं कर सकते जो आज सहजयोग के लिये आवश्यक हैं।

आप जानते हैं कि चारों तरफ समस्यायें ही समस्यायें है, हमें ऐसा लगता है मानों यह विश्व डूबने वाला हो। जब मैं अमेरिका गई तो मुझे ऐसा लगा जैसे वहाँ उन्होंने एक नर्क की सृष्टि कर दी हो। हे परमात्मा! उनका कोई धर्म नहीं है, धर्म में वे विश्वास ही नहीं करते। अधर्म की पूर्णतः पूजा करते हैं। इस प्रकार का वातावरण पूरे विश्व में बन गया है, पूरे विश्व में अमेरिका के अधार्मिक जीवन की

प्रतिक्रिया दिखाई पड़ती है। परन्तु लोग सोचते हैं कि इसमें कोई बुराई नहीं। आप उन्हें कुछ भी बतायें वे विश्वास नहीं करते, सोचते हैं कि इसका कोई मूल्य नहीं। अपने जीवन, अपने परिवार तथा समाज के मूल में छिपे विनाश को वे नहीं देखते। पूरा देश, मुझे लगता है, ऐसे घिनौनी अधार्मिक प्रकृति से भरा हुआ है कि व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता कि इस प्रकार के विचार इनके मस्तिष्क में कैसे आते हैं! ये विचार मैं आपको नहीं बताऊँगी, आप इन्हें भली–भांति जानते हैं। परन्तु यदि आप अपने बच्चों की रक्षा करना चाहते हैं तो आपको स्वयं एक आदर्श गुरु बनना होगा। **इन शक्तियों के आपके अन्दर जागृत हुए बग़ैर यदि आप सहजयोग की बात करते हैं, स्वयं को सहजयोगी समझते हैं या सहजयोग का प्रचार करते हैं तो यह सफल न होगा।** तो हमें देखना होगा कि किस प्रकार हम इन शक्तियों को अपने अन्दर विकसित करें।

आपको यह बताना है कि अपने गुरु के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करें। मेरे लिए बहुत उलझन वाली बात है। परन्तु ज्यों ही आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है और आप इसमें उतर जाते हैं तो स्वतः ही आपका दृष्टिकोण नम्र होने लगता है जिसके माध्यम से आपमें गुरु के बहुत से गुण विकसित होने लगते हैं मान लो कि गुरु ऊँचे स्थान पर बैठा है तो आपको चाहिये कि उससे नीचे बैठें। कुछ लोग मेरे अच्छे स्वभाव का अनुचित लाभ उठाते हैं। बहुत से लोग मुझे कहते हैं कि "आप अपने शिष्यों को सुधारें, वे आपसे बराबर के स्तर पर बात करते हैं" मैंने कहा, "उन्हें सबक मिल जाएगा, उन्हें सबक मिल जाएगा!" परन्तु कभी –कभी ऐसा नहीं होता, और वे इस प्रकार बातें करने लगते हैं मानों किसी मित्र से या समान व्यक्ति से कर रहे हों।

नम्रता सर्वप्रथम है। आपको विनम्र होना होगा, अत्यन्त विनम्र। अब आप इस बात को जांचें: दूसरों से बातचीत करते हुए क्या आप नम्र होते हैं ? दूसरों के विषय में सोचते हुए क्या आप विनम्र होते हैं ? अपनी पत्नी और बच्चों की देखभाल करते हुए क्या आप विनम्र होते हैं ? स्वयं को गुरु समझने वाले हर व्यक्ति के लिए यह गुण आवश्यक हैं। नम्रता प्रथम गुण है, या मैं कहूँ, एक सागर है जिसमें आपको कूदना होगा। कुछ लोग सोचते हैं, "श्री माता जी यदि हम विनम्र होंगे तो अन्य लोग हमारा लाभ उठायेंगे।" कोई आपका अनुचित लाभ नहीं उठा सकता। आपको एक अन्य बात भी याद रखनी है कि आप सुरक्षित हैं और परम चैतन्य आपकी देखभाल कर रहा है। आप इस बात को जानते हैं, परन्तु वास्तव में कितने लोग है जिन्हें ये विश्वास है कि परमचैतन्य हमारे साथ है। **वास्तव में यदि आपको यह विश्वास है कि परमचैतन्य है तो न तो आप घबराते हैं और न चिन्तित होते हैं, और न ही सभी प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचार आप में आते हैं। परन्तु स्वयं को असुरक्षित मानते हुए यदि आप सोचतें है कि क्या होगा ? कैसे सबकुछ चलेगा ? तो परमचैतन्य आपको अकेला छोड़ देता है।** आपको सारा नाटक देखना है कि किस प्रकार परमचैतन्य कार्य करता है, किस प्रकार ये सबकुछ चलाता है, और किस प्रकार आप व्यवहार कर रहे हैं। **मान लो आपकी स्थिति**

ठीक नहीं है और आप बहुत अधिक दिखावा करते हैं तो क्या होता है ? तो आपको इसका इनाम मिलता है; ऐसा नहीं है कि मैं कुछ करती हूँ परन्तु परमचैतन्य आपको सबक सिखाएगा, ऐसा सबक कि आप याद रखेंगे कि आपको एक भिन्न प्रकार का व्यक्ति होना चाहिए था।

हमें समझना चाहिए कि हम सहजयोग में क्यों आए हैं। इसकी जड़ों से आरम्भ करें। सहजयोग में क्योंकि हम पूर्ण सत्य को जानना चाहते थे और अब अपनी चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप इस सत्य को जान गए हैं, आपको सभी कार्य चैतन्य लहरियों के माध्यम से ही करने चाहिए। अपनी चैतन्य लहरियों पर पूर्ण सत्य को जैसा भी आप महसूस करते हैं आपको उसका अनुसरण करना चाहिए। परन्तु कई बार मैंने देखा है कि दुर्भाग्यवश बहुत से लोग सोचते हैं कि उनकी लहरियाँ ठीक हैं। वे ठीक हैं और जो भी कुछ उन लहरियों पर वे प्राप्त कर रहे हैं वह बहुत अच्छा है। अब इसे कैसे ठीक किया जाए! यह अत्यन्त कठिन कार्य हैं। अहम् के कारण ऐसा होता है। जब आप अहम् ग्रस्त होते हैं तो आपको स्वयं में कोई दोष नहीं नज़र आता। तब यदि लहरियाँ भी आपकी कुछ बता रही हैं तो हो सकता है कि कोई अन्य ही आपको बता रहा है क्योंकि आप तो वहाँ हैं ही नहीं, केवल आपका अहम् वहाँ है और आपका अहम् आपको बिगाड़ रहा है तथा ऐसी बात सिखा रहा है जिन्हें सर्वसाधारण स्थिति में आप स्पष्ट देख लेते कि 'मैं कुछ अनुचित कर रहा हूँ। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।' इस शुद्धिकरण तथा सुधार की प्रक्रिया में जब आप लग जाते हैं तो आपको देखना चाहिए कि आप सूक्ष्म हो रहे हैं या स्थूल।

आंकलन की यह सर्वोत्तम विधि है। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो छोटी छोटी चीज़ों पर चैतन्य लहरियों को आँकते रहते हैं। इस पेड़, इन फूलों, इस लैम्प या इन भौतिक चीजों की चैतन्य लहरियाँ ठीक है या नहीं। परन्तु किस लिए आप चैतन्य लहरियाँ देखना चाहते हैं ? भौतिक लाभ के लिए आप चैतन्य लहरियाँ देखते हैं। आप सोचते हैं, कि यदि चैतन्य लहरियाँ ठीक होंगी तो आप सुरक्षित हैं, आपको कोई हानि न होगी। यह सत्य नहीं है क्योंकि चैतन्य लहरियाँ सांसारिक वस्तुओं और सांसारिक मामलों को आंकने के लिए नहीं होती।

चैतन्य लहरियों का यह सबसे घटिया अर्थ है। हमें चैतन्य लहरियों को घटिया नहीं बनाना चाहिए क्योंकि चैतन्य लहरियाँ ऐसा मार्ग दर्शन भी कर सकती है जो हमारे उत्थान के लिए बहुत ही हानिकारक हो सकता है। एक बार मैंने किसी सहजयोगी को कहीं भेजना चाहा पर उसने कहा, 'श्री माता जी मैं वहाँ नहीं गया। 'मैंने पूछा, क्यों ?" 'क्योंकि मुझे लगा कि चैतन्य लहरियाँ बहुत खराब थीं।' मैंने कहा, "इसीलिए तो मैंने तुम्हें वहाँ जाने के लिए कहा था! यदि चैतन्य लहरियाँ ठीक होतीं तो तुम्हारा वहाँ जाने का क्या लाभ होता ?" तुम्हें वहाँ भेजने का लक्ष्य तो यह था कि तुम वहाँ कुछ मदद कर सको, परन्तु इससे पूर्व ही तुमने अपनी चैतन्य लहरियों पर निर्णय कर लिया और वहाँ गए ही नहीं।

तो होता क्या है कि हम अत्यन्त सहज एवं

सुखमय जीवन प्राप्त करना चाहते हैं तथा यह भी चाहते हैं कि हमारी सारी समस्याएं सहजयोग द्वारा ही सुलझनी चाहिएं। जो भी हमारी इच्छा हो वह पूर्ण होनी चाहिए, अन्यथा हम सोचते हैं कि सहजयोग किसी काम का नहीं। और इच्छाएं भी अधिकतर व्यक्तिगत होती हैं! मेरा बच्चा ठीक नहीं है वह ठीक हो जाना चाहिए, मेरे पति का आचरण ठीक नहीं है, मेरा पति ठीक हो जाना चाहिए, या मेरा मकान नहीं है मुझे मकान प्राप्त हो जाना चाहिए। एक ग्राहक की तरह से हम अपने को चलाते रहते हैं। हर समय सोचते रहते हैं, अब मुझे लड़की की जगह लड़का मिल जाना चाहिए, और यदि पुत्र न मिला तो सहजयोग को दोष देते हैं। आपकी इच्छानुरूप यदि कोई कार्य नहीं होता तो आप सोचते हैं कि सहजयोग के कारण ही आपको हानि हुई है और सहजयोग के कारण आप कष्ट उठा रहे हैं। आपका विश्वास सहजयोग के प्रति गहन नहीं है। **यदि सहजयोग में आपका विश्वास गहन हो तो आप कहेंगे; "जो मर्ज़ी हो मैं सहजयोगी रहूँगा।** मान लो किसी की मृत्यु हो जाती है, यद्यपि सहजयोग में प्रायः लोगों की मृत्यु जल्दी से नहीं होती, वे यदि मरना भी चाहें तो नहीं मरते। परम् चैतन्य ही इसका निर्णय करते हैं। परन्तु मान लो कि आप ऐसी इच्छा कर भी लें तो भी वह पूर्ण नहीं होती। जब यह पूर्ण नहीं होती तो आप परेशान हो जाते हैं और सोचते हैं, कि गलती क्या है ?' परन्तु आपकी इच्छा परमात्मा की इच्छा नहीं है और परम् चैतन्य तो सर्वशक्तिमान परमात्मा की इच्छा है। उदाहरणार्थ मैं अमेरिका गई और वहाँ मुझ पर नकारात्मकता (Negativity) का आक्रमण हुआ और मुझे कष्ट पहुँचा। इन दिनों मैं परेशान रही, मुझे काफी दर्द तथा अन्य प्रकार की तकलीफें थीं। परन्तु ये कष्ट मुझे भुगतना ही था क्योंकि अब अमेरिका के सहजयोगी इस बात को महसूस करेंगे कि उनके झुके हुए सिर उठाने के लिए कितना बलिदान करना पड़ता है। पैसा ऐंठने वाले लोगों से जो लोग प्रभावित हों वे कितने मूर्ख हैं। बहुत से लोग मेरे पास आए और कहने लगे कि 'श्री माता जी यदि आप कहें कि मैं 300 डालर लेती हूँ तो आपको यहाँ हजारों शिष्य मिल जाएंगे।' मैंने कहा ,' वे शिष्य नहीं होंगे।' ऐसे लोग तो पूर्णतया मूर्ख होंगे। सहजयोग आप पैसे से प्राप्त नहीं कर सकते। यह पहला सिद्धांत है जिसे उनमें से अधिकतर लोग नहीं समझते, उनकी समझ में नहीं आता कि बिना धन दिए वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं। न्यूजर्सी में कुछ धनी गुजराती थे। उन्होंने सहजयोगियों से पूछा कि 'इतनी सुगमता से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेना कैसे सम्भव है ?' यह सम्भव नहीं है क्योंकि यह बहुत कठिन कार्य है। सभी शास्त्रों ने और सभी लोगों ने कहा कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना कठिन कार्य है तो आप इतनी सुगमता से किस प्रकार प्राप्त कर रहे हैं ? कोई न जानता था कि इन लोगों को किस प्रकार उत्तर दिया जाए! आपको यह कहना चाहिए था; ठीक है, यह कठिन है, बहुत कठिन है और यह सच है कि सामूहिक रूप से इसे दिया भी नहीं जा सकता । परन्तु यदि कोई ऐसा कर रहा है तो आपको इसके विषय में सोचना चाहिए कि वह कैसे कर रहा है ?" तो इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण प्रश्न हैं और इनके उत्तर में आपको अत्यन्त नम्रतापूर्वक

बताना चाहिए कि, " श्रीमन यह कार्य करने के लिए व्यक्ति में इसकी योग्यता भी होनी चाहिए।" तो लोग तो उनके पीछे भाग रहे हैं जो उनसे धन ऐंठ रहे हैं और उन्हें बेवकूफ बना रहे हैं। लोग डींग मारते हैं कि हमारे तीन गुरु हैं, हमारे सात गुरु हैं। उनकी दशा पर मुझे हैरानी होती है।

तो वे लोग, जिन्हें संस्कृत में मूढ़ कहते हैं, जो मस्तिष्क विहीन हैं, उन्हें साक्षात्कार नहीं मिल सकता। अतः उन्हें छोड़ दीजिये। वे यदि आपसे बहस भी करें तो आप उन्हें छोड़ दें। आपसे बहस करना उनका अधिकार नहीं है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना उनका अधिकार है, परन्तु आपसे बहस करना या मूर्खता पूर्ण प्रश्न करना उनका हक नहीं है। आपको सदा याद रखना है कि नम्रता के साथ–साथ आपने अपनी गरिमा को भी बनाये रखना है क्योंकि आप गुरु हैं। एक बार जब आप जान जाते हैं कि आप गुरु हैं तो आप विदूषक की तरह से बर्ताव नहीं करते, आपका आचरण गरिमामय होना चाहिए। आपका व्यक्तित्व भी मनोहर होना चाहिए, लोगों को चिढ़ाने वाला नहीं। आपका व्यक्तित्व ही दर्शायेगा कि आपमें कुछ विशिष्ट है।

इस प्रकार का व्यक्तित्व आप किस प्रकार विकसित करेंगे? पश्चिम में "अहम्" सबसे बड़ी समस्या है और पूर्व में "प्रति–अहम्"। मैं नहीं जानती यह अहम् की समस्या कहाँ से आई! जीवन के सभी कार्यों में वे दर्शाते है कि वे कितने अहंकारी हैं। उदाहरणार्थ मैं अमेरिका गई तो देखकर हैरान हुई कि वहाँ एक सामाजिक समस्या है कि वे लोग श्वेत तथा श्याम रंग के लोगों से भिन्न प्रकार का बर्ताव करते हैं। रंग तो परमात्मा की देन है, कोई श्वेत होगा और कोई श्याम। यदि सभी लोग एक से हों तो यह पलटन सी लगेगी। कुछ वैचित्र्य तो होनी ही चाहिए, शक्लों तथा अभिव्यक्ति में भी कुछ भिन्नता तो होनी ही चाहिए। व्यक्ति को भिन्न या अच्छी अभिव्यक्ति वाला होना चाहिए अन्यथा ऐसे संसार में होंगे जहाँ सभी एक से दिखाई देंगे। परन्तु वहाँ इतना समाजवाद है कि मैं हैरान थी कि यह किस प्रकार मानव मस्तिष्क में बैठ पाया! तो इस प्रकार के समाजवाद के लिए आपके मन में घृणाभाव आ जाना चाहिए। यह समझना तो अत्यन्त सुगम है कि श्वेत रंग का व्यक्ति भी अत्यन्त अत्याचारी स्त्री या पुरुष हो सकता है और श्वेत रंग की महिला अत्यन्त अत्याचारी माँ भी हो सकती है और श्याम वर्ण व्यक्ति अत्यन्त करुणामय एवं उदार हो सकता है इन चीज़ों का रंग से कोई सम्बन्ध नहीं। स्वभाव का व्यक्ति के रंग से कोई सम्बन्ध नहीं। काले रंग के लोगों से इतनी घृणा की गई है कि वे प्रतिक्रिया कर बैठते हैं। और 'स्वाभाविक रूप से ' कभी–कभी वे अत्यन्त अपरिपक्व और क्रूर ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं। परन्तु इस प्रकार का चित्त, मानव के लिए इस प्रकार का गलत दृष्टिकोण, यह तो पशु भी सहन नहीं करेंगे। मानव के लिए ऐसा दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि अभी तक आप सहजयोग के योग्य नहीं हुए। तो आपमें से कोई भी यदि रंग–भेद करता है तो वह सहजयोग में 'गुरु' नहीं हो सकता।

भारत में जातिवाद है, जो कि समान रूप से भयावह है। इसमें न तो कोई विवेक है और न ही इसका कोई आधार है। परन्तु भारत में लोग मानते हैं कि कुछ जातियाँ उच्च हैं और कुछ नीच। सभी

जातियों के लोग कुकर्म कर सकते हैं, उसकी कोई सीमा नहीं। नीची जाति के लोग भी बहुत अच्छे हो सकते हैं। भारत में छोटी जाति के लोगों में भी बहुत अच्छे हो सकते हैं। भारत में छोटी जाति के लोगों में भी बहुत से महान सूफी तथा कवि–हो चुके हैं। ये जातियाँ मनुष्य की बनाई हुई हैं और आप तो जानते हैं कि मनुष्य की बनाई हुई बातें हमें रुचिकर नहीं हैं। **मानव प्रदत्त विचार हमें पूर्ण विनाश की ओर ले जाएंगे क्योंकि घृणा–घृणा को बढ़ावा देती है। आप यदि घृणा से छुटकारा नहीं पा सकते तो मैं कहूँगी कि आप सहजयोगी नहीं हैं।** ये सब बन्धन हैं– आपने श्वेत परिवार में जन्म लिया है इसलिए आप श्वेत हैं, आप ईसाई परिवार में जन्में हैं इसलिए आप ईसाई हैं। ऐसा केवल आपके जन्म के कारण है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि आप उच्च हैं या नीच। यदि आप देखें तो आज विश्व की सभी समस्याएं मनुष्य के स्वयं को उच्च समझने के कारण हैं। इसे हम सामूहिक बनकर ही बदल सकते हैं। उदाहरणार्थ आश्रमों में हम सभी रंगो के लोग समान अधिकार, सूझ बूझ, प्रेम तथा स्नेह से रहें। ऐसा यदि नहीं है तो इसे आश्रम कहने का कोई लाभ नहीं। एक बार इन लोगों ने मुझसे पूछा, "श्री माता जी क्या आप हार्लेन में प्रवचन देंगी ?" मैंने कहा "क्यों नहीं"? तो कुछ सहजयोगी कहने लगे कि 'श्री माता जी आप नहीं जानती कि हार्लेन क्या है।' मैंने कहा, मैं जानती हूँ। कोई हानि नहीं है। वे कहने लगे "आप जानती हैं कि यहाँ काले लोग हैं और वे .....।" मैंने कहा , "मैं भी श्याम रंग की हूँ। आप चाहें तो मुझे श्याम कहें, चाहें तो श्वेत" परन्तु प्रेम हमारे अन्दर के इस प्रकार के हास्यास्पद विचारों को शुद्ध कर सकता है। किसी को श्वेत या श्याम कहना यह दर्शाता है कि आपके पास देखने के लिए दृष्टि नहीं है। प्रेम से परिपूर्ण हृदय व्यर्थ की चीज़ों को नहीं देखता।

आज के दिन हम गुरु की महानता का उत्सव मना रहे हैं। सभी गुरुओं की ओर देखिए, वे कैसे थे और किस प्रकार बर्ताव करते थे। भारत में तथा अन्य देशों में बहुत से सन्त हुए। इन सूफियों तथा सन्तों ने कभी जाति पाति में तथा श्याम और श्वेत रंग में कोई भेद नहीं किया। ईसा तथा बुद्ध ने कभी इन चीज़ों में विश्वास नहीं किया। ये सब मनुष्य द्वारा बनाई गई चीज़ें हैं और हमने इन्हें स्वीकार कर लिया है तथा आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् भी इनसे चिपके हुए हैं। अब इनके विषय में बातें करने मात्र से हम इनसे छुटकारा नहीं पा सकते। इनसे छुटकारा पाने का प्रयत्न करें। इसका एक बहुत सहज तरीका यह है कि ध्यान में बैठकर आप यह देखें कि आप कितने लोगों को प्रेम करते हैं और क्यों। दया के कारण नहीं, केवल प्रेम के कारण। केवल प्रेम के कारण आप कितने लोगों की परवाह करते हैं ? मैंने इसके बहुत सुन्दर उदाहरण देखे हैं। परन्तु अभी तक कुछ ऐसे बन्धन हैं जिन्हें पूर्णतः त्यागना आवश्यक है और विशेषकर उस व्यक्ति के लिए जो सहजयोग में गुरु है। आपको शुद्ध एवं खुला हृदय और प्रेममय व्यक्ति होना होगा। सहजयोगी के हृदय को परम चैतन्य की धुन बजानी होगी। उसका हृदय यदि मानव प्रदत्त विचारों से परिपूर्ण होगा तो मैं नहीं जानती कि इसका परिणाम क्या होगा। हृदय प्रत्यारोपण करते

हुए भी इन लोगों को वास्तविक हृदय लेना पड़ता है, मानव रचित नहीं। तो जब भी आप इन व्यर्थ के विचारों में फँसने लगें तो यह सोच लें कि यह कभी भी आपको सामूहिक न होने देंगे।

अतः आपको अन्तर्दर्शन करना होगा। क्या हम एक हैं या एक दूसरे को ही तोल रहे हैं। सामूहिक रह कर ही हम यह सब देख सकते हैं। सामूहिकता में रहते हुए ही आप देखने लगते हैं कि आपमें क्या कमी है, आपमें क्या होना चाहिए। प्रेम से परिपूर्ण हृदय शान्ति दायक होता है। उस हृदय का हर क्षण आनन्ददायी है। श्री राम की एक कहानी है कि उन्होंने वृद्ध शबरी के बेर बड़े प्रेम से खाए थे। यह क्या दर्शाता है। उच्च कुलीन राजा श्रीराम का नीची जाति की वृद्धा के प्रेम से दिए गए बेर खाना। यह दर्शाता है कि गुरु रूप में आपके व्यक्तित्व के स्तर को आपके शुद्ध तथा प्रेममय हृदय से और आपके उच्चतम व्यक्तित्व से आँका जा सकता है। व्यक्तित्व ऐसी चीज़ नहीं है जिसे बनावटी रूप से बनाया जा सके। यह बनावटी नहीं है, स्वाभाविक है, पूर्णतः स्वाभाविक। जो भी कुछ आप करते हैं वह स्वाभाविक होना चाहिए। तो बातचीत तथा रहन सहन में यह बनावट बहुत सी समस्याओं को जन्म देती है। उदाहरणार्थ न्यूयार्क (अमेरिका) में हमारा एक आश्रम था जहाँ एक स्त्री बहुत ही नियमनिष्ठ थी। सब चीज़ टिपटाप होनी चाहिए– चम्मच वहाँ होने चाहिएं, कांटे वहाँ होने चाहिएं। उस स्त्री ने बहुत से लोगों की भावनाओं को चोट पहुँचाई। ऐसा करना आवश्यक नहीं है। सहजयोग में सांस्कृतिक बन्धन महत्वपूर्ण नहीं हैं क्योंकि अब आप गुरु बन गए हैं और गुरु कहीं भी रह सकता है, कहीं भी, और कहीं भी खा सकता है। ऐसा होना चाहिए। परन्तु सहजयोग में भी मैंने देखा है कि ज्यों ही खाना लगता है लोग एकदम इसपर टूट पड़ने के लिए उद्यत हो जाते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि मेरे सामने खाना परोसा गया। कुछ देर बाद वे प्लेटें हटाने लगे तो मैंने पूछा कि क्या हुआ ? मैंने तो अभी खाना खाना है। " ओह! श्री माता जी अभी तक आपने खाना नहीं खाया ?" "नहीं, अभी तो मैंने इसे छुआ भी नहीं।" तो भूख सबसे निम्न कोटि की इच्छा है। एक गुरु इसकी चिन्ता नहीं करता। जो भी कुछ आप दें– ठीक है। जो भी कुछ आप देना चाहें ठीक है और न भी दें तो ठीक है। यह गुण आपने अपने अहम् का इलाज़ करके विकसित करना होता है। लोगों को यदि आप किसी अन्य से बाद में खाना परोसें तो उन्हें बहुत चोट पहुँचती है। यह सब बेकार की चीज़ें मैंने सहजयोग में देखी हैं। वास्तव में तो यह अत्यन्त घटिया इच्छा है। यदि आप वास्तविक गुरु बनना चाहते हैं तो आपको इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करनी चाहिए। इससे, निसन्देह बहुत सी समस्याएं सुलझ जाती हैं। अभी तक, जैसा कि मैंने देखा है, सहजयोगी नशीली दवाओं, शराब तथा अन्य चीजों को नहीं अपनाते। यह बहुत बड़ा वरदान है। यदि मुझे उस स्तर से कार्यारम्भ करना पड़ता तो, मैं नहीं जानती, मुझे कितनी गहराई में जाना पड़ता और कहाँ से आपको खींचकर ऊपर लाना पड़ता ? परन्तु यह ,वास्तव में बहुत अच्छी चीज़ है– बहुत ही अच्छी। परन्तु अभी भी आपने जीवन की सुन्दरता, जो अन्य लोगों के चित्त को आकर्षित कर सके, आपकी बातचीत, आपके आचरण और प्रेम व्यवहार

पर निर्भर करेगी। तो यह कहना पड़ेगा कि गुरु पद केवल आपके प्रेम से ही प्राप्त हो सकता है। उदाहरणार्थ यदि आपने कोई नाटक मंचन करना हो जिसके लिए आपको दस व्यक्तियों की आवश्यकता हो और वे सभी व्यक्ति यदि आप किसी देश या समूह विशेष से लें तो उसमें कोई मजेदारी नहीं होती। संगीतज्ञों की एक मंडली भी उन्हें चाहिए होती है तो वे एक विशेष जाति, धर्म या स्कूल से लेते हैं। तो इससे पता चलता है कि आप अभी तक उस ऊँचाई तक नहीं पहुँचे। गुरु रूप में आपको सभी प्रकार की संस्कृति और सभी प्रकार के सौन्दर्य अच्छे लगने चाहिएं तथा यह बात हमारे रोज़मर्रा के जीवन में आनी चाहिए। रंग, जाति, पद तथा वर्ग के आधार पर आपको किसी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। सभी गुरुओं तथा सन्तों के जीवन ने यही दर्शाया है। तुकाराम ने कहा था कि, "हे परमात्मा आपका कोटि–कोटि धन्यवाद कि आपने मुझे निम्नजाति का बनाया।" वे निम्न जाति के नहीं थे। परन्तु उन्होंने ऐसा कहा। हम सबको भी सदा इसी बात में नहीं उलझे रहना चाहिए कि हमारा जन्म कौन से कुल में हुआ, हमारा व्यक्तित्व क्या है या हमारा कितना ऊँचा नाम है। किसी को पता भी नहीं लगना चाहिए कि कौन सन्त है और कौन नहीं है। लोगों को तो अपने सन्त होने का भी घमण्ड हो जाता है।

अमेरिका में, मैं हैरान थी, कि रूस के जो लोग वहाँ गए हुए थे वे भिन्न प्रकार के ही लोग थे। वे अपनी आँखे उठाकर मेरी तरफ देखते भी न थे। परन्तु बहुत गहन थे, अत्यन्त गहन। उनकी चैतन्य लहरियाँ बहुत गहन थीं। संभवतः इसका कारण यह हो कि साम्यवाद के समय उन पर अत्याचार हुए हों और अब अमेरिका में आकर उन्होंने, तथाकथित स्वतन्त्रता तथा इसका अभिशाप देखा हो। तो यह दोनों चरम बिन्दु देखने के पश्चात्, मैं सोचती हूँ, वे अपने अन्तस में बहुत गहन चले गए हैं। उनमें परस्पर गहन एकता है तथा सशक्त हैं। मैं हैरान थी कि इससे पूर्व मैं उनसे कभी नहीं मिली। इससे पहले वे रूस से कभी नहीं आए। उनके इस प्रकार बने रहने का कारण यह था कि उनका कोई धर्म न था जो उनके मस्तिष्क में घुसा हुआ हो। सभी धर्म उनके लिए समान हैं। वे किसी धर्म के अनुयायी नहीं हैं। अतः गुरु किसी धर्म विशेष से जुड़ नहीं सकता क्योंकि यह धर्म भी मानव द्वारा बनाए गए हैं। इन धर्मों की वजह से चहुँ ओर समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं और लोग परस्पर लड़ रहे हैं। किस प्रकार वे दिव्य हो सकते हैं ?

तो आप किसी भी प्रकार के धार्मिक पक्ष–पात में न फँसें। मैंने देखा है कि कोई सहजयोगी यदि ईसाई है तो वह ईसाई मत के प्रति पक्ष–पात करता है, और यदि यहूदी है तो अपने धर्म के प्रति। तो सहजयोग में आने का क्या लाभ है ? उनका चित्त यदि अन्तर्मुखी होगा तभी वे जान पायेंगे। आपको स्वयं को यह देखने के लिए निर्देशित करना होगा कि आपमें क्या कमी है और गुरु रूप में आप अधिक सफल क्यों नहीं हैं। **गुरु की सफलता क्या है :– वह समय की परवाह नहीं करता सभी समय उसके लिए पावन होते हैं। उसे किसी के देर से या जल्दी आने की कोई चिन्ता नहीं होती, वह घड़ियों तथा समय का गुलाम नहीं होता।** यह सब भी मानव रचित है।

मेरे विचार में, तीन सौ वर्ष पूर्व घड़ियाँ नहीं होती थी और कोई भी समय के विषय में तुनकमिजाज नहीं होता था। तो पहली चीज़ यह है कि वह समय से परे होता है–कालातीत। वह गुणातीत होता है। गुणातीत का अर्थ है कि उसकी प्रवृति बायें, दायें या मध्य की ओर की नहीं होती। वह इन चीज़ों से, इन गुणों से परे होता है। हर चीज़ को वह दिव्य प्रकाश में देखता है। हर चीज़ को। यदि उसके साथ कुछ अच्छा घटित होता है तो वह कहता है:– दिव्यज्योति की कृपा से ही यह कार्य हुआ है। यदि उसके साथ कुछ बुरा घटित हो जाये तो वह कहता है कि दिव्यज्योति ऐसा ही चाहती थी।

दिव्य प्रकाश के लिए ही वह सब कुछ छोड़ देता है। वह गुणों से परे है। मान लो कोई व्यक्ति आक्रामक है, अहमग्रस्त है तो वह कहेगा, "आह! यह कैसे हुआ? मुझे ऐसा चाहिए था, ऐसा नहीं हुआ।" और अब वह चुनौती देगा तथा आलसी प्रवृत्ति (बायीं ओर का) व्यक्ति रोने–बिलखने लगेगा कि "मुझे खेद है कि मेरे साथ ऐसा घटित हुआ; ऐसा नहीं होना चाहिए था" आदि, आदि। मध्य में रहने वाला व्यक्ति भी सोच सकता है कि "मेरी चैतन्य लहरियाँ कहाँ तक हैं ? कैसे मैं न समझ पाया" आदि। परन्तु जो व्यक्ति सच्चा गुरु है वह इन घटनाओं को नाटक की तरह से देखता है, नाटक के मात्र एक साक्षी के रूप में। ऐसा घटित हुआ ऐसा होना था, इसलिए तो हुआ। तो हम इसमें से क्या निकालते हैं ? वह इसमें से अवश्य कुछ निकालता है;– एक शिक्षा (सबक) कि यह ठीक नहीं था या यह गलत था। बस इतना ही, उस क्षण के लिए अपने मस्तिष्क का मन्थन न किये चले जाना; मात्र इतना ही व्यक्ति प्राप्त करता है तथा वह व्यक्ति किसी चीज़ के बारे में चिन्तित नहीं है। तो वह गुणों से ऊपर उठ जाता है, गुणों से वह परे है। कहीं भी वह खा सकता है, कहीं भी वह सो सकता है। उसे इस बात की परवाह नहीं होती कि वह कहाँ रहता है। वह कार में चलता है या बैल गाड़ी में, इसकी उसे कोई परवाह नहीं होती। यदि उसका सम्मान न किया जाये तो भी उसे बुरा नहीं लगता और यदि उसको पुष्पमाला अर्पण की जाये तो भी वह अपने आपको सम्मानित महसूस नहीं करता। वास्तव में उसके व्यक्तित्व को कोई बाह्य चीज़ उच्च नहीं बना सकती। कुछ भी नहीं। आप उसे कोई साधारण सी चीज़ दे दें तो ठीक है और न दें तो भी ठीक है। अपना आंकलन वह आपकी दृष्टि के माध्यम से नहीं करता। स्वयं को वह अपनी दृष्टि से आंकता है। स्वानन्द के आनन्द को वह स्वयं अपने लिए देखता है। किसी चीज़ के बारे में तुनकमिजाज होने में क्या रखा है, किसी चीज़ के पीछे भटकने में क्या रखा है ? सभी कुछ अपने समय पर हो जाता है और यदि नहीं होता तो नहीं होता। क्या फर्क पड़ता है ? मात्र इसे सोचें।

सहजयोग में गुरु को एक संयोजी शक्ति (Binding Force) भी होना पड़ता है। मैंने देखा है कि दो प्रकार के लोग होते हैं जो सम्बन्ध तोड़ने में ही लगे रहते हैं। उनके लिए ऐसा करना बहुत सुगम होता है। वे शिकायतें ही करते रहते हैं। परन्तु कुछ अन्य लोग होते हैं जिनमें लोगों को इस प्रकार से समीप लाने की शक्ति होती है, इतनी मधुरता से वे इस कार्य को करते हैं कि लोग परस्पर समीप आ जाते हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें

क्षमा करना पड़ता है, स्वतः ही ऐसा हो जाता है तथा लोग इस प्रकार के व्यक्ति के समीप आ जाते हैं।

मैं आश्चर्य चकित थी कि अमेरिका में बहुत ही कम सहजयोगी हैं। उन्होंने बताया कि पचास हज़ार डालर खर्च करके उन्हें पचास सहजयोगी मिले। एक सहजयोगी के लिए एक हज़ार का खर्च ! तो इतनी दुर्दशा है। फिर भी उन्हें खोजने के लिए जाना पड़ता है क्योंकि बहुत से साधक साधना के जंगल में अब भी खोए हुए हैं। परन्तु मैंने सोचा, हो सकता है, कि यह एक वृत्त (गोल दायरा) हो। मूर्खता के इस वृत्त को उन्हें पार करना है और तब निश्चित रूप से वे तत्व को देख सकेंगे। और ऐसा हुआ।

मेरे प्रवचन के लिए इस बार चार हज़ार लोग आये, उस देश में इतने लोग कभी नहीं आये। किसी को भी इतनी संख्या में इतने श्रोता नहीं मिले, परन्तु अभी भी बहुत से लोग नहीं आये। परन्तु उन्हें आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो गया। तो शनैःशनैः मैं देख सकी कि अमेरिका में यह कार्य आरम्भ हो गया है। सहजयोगियों को भी केवल अपने घरों तथा निवास स्थानों के विषय में चिन्ता न करके पूरे हृदय से लोगों के पास जाना चाहिए। मैं तो कहूँगी कि जो भी सहजयोगी जा सकें अमेरिका जायें और इस कार्य को करें। ऐसा भी हो सकता है कि जब बाहर के लोग आ कर सहजयोग बतायेंगे तो सम्भवतः वहाँ के लोग प्रभावित हों। झूठे गुरुओं की संख्या इतनी अधिक है कि आप इनकी गिनती भी नहीं कर सकते। हैरानी की बात है कि इन गुरुओं को भी वहाँ के लोगों ने स्वीकार किया है। यद्यपि उन्होंने कष्ट उठाये हैं, अपना धन गवांया है, सभी कुछ, फिर भी उन्होंने इन लोगों को स्वीकार किया है:– "कुछ भी हो वह हमारा गुरु है!" तो मूलतः उनमें कुछ कमी है कि वे नहीं समझ पाते कि किस चीज़ की आशा करनी चाहिए।

मैंने एक पुस्तक लिखी है, शायद यह उन तक पहुँच पायेगी। परन्तु आप सब भी यदि अपने अनुभव आदि लिख सकते, उन्हें छपवा सकते, तो हो सकता हैं कि यह उनकी आँखे खोलने में सहायक होता। कुछ भी लिखते हुए आपको याद रखना है कि यह सहजयोगी के गुणों को दर्शाये। उन्हें पता चले कि आप कैसे हैं ? उन्हें ऐसा न लगे कि उनका आँकलन किया जा रहा है, उन्हें घटिया कहा जा रहा है या उन्हें चोट पहुँचाने की कोशिश की जा रही है। परन्तु इस बात को ऐसे ढंग से कहें कि यह उनकी सहायता करे और उन्हें सुधारे। गुरु के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने विषय में कोई झूठे विचार न बना ले। वह चाहे गरीब परिवार से हो या धनवान परिवार से इसके विषय में उसे सचेत नहीं होना चाहिए। आप कबीर को लें। वह मात्र एक जुलाहा था, आप रै दास को देखें, वह एक साधारण जूते बनाने वाला था। भारत में यह अत्यन्त छोटी जाति मानी जाती है। उन्होंने अत्यन्त सुन्दर कविता लिखी हैं।

नाम–देव दर्ज़ी थे। इन सब लोगों ने अत्यन्त सुन्दर कविताओं के माध्यम से एक ही बात कही है। तो उन्होंने किस प्रकार यह उपलब्धि पायी ? क्योंकि वे महान आध्यात्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश कर गये थे। मैं जानती हूँ कि आप लोग भी उसी प्रकार की सुन्दर कवितायें लिखते हैं, मैं जानती हूँ। परन्तु कुछ अच्छे कवि अत्यन्त जिद्दी तथा अहंकारी व्यक्ति

भी हो सकते है। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि आप इतनी सुन्दर कवितायें लिख रहे हैं और फिर भी आप अहम् से भरे हुए हैं! तो यह कविता आपमें कहाँ से आ रही है ? तो आपकी आत्मा ही सर्वप्रथम हैः– आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि लोग कह उठें " हम वास्तविक गुरु से मिले हैं। " **इसके लिए, आप भली भांति जानते हैं, आपको न तो अपने परिवार त्यागने हैं और न ही कुछ और , परन्तु यदि अब भी आपमें अहम् विद्यमान है तो मैं नहीं जानती कि क्या कहूँ।** परन्तु आपको इससे छुटकारा पाना होगा। पूर्णतः सामूहिक रूप से ही अहम् का त्याग किया जाना चाहिए। सामूहिक रूप से। यह भी एक बात है कि लोग गुप्त रूप से, अपने अन्दर, अहम् ग्रस्त हैं। कभी कभी ऐसा लगता है कि लोगों को यह अति सूक्ष्म रोग है और वे इसमें फँसे रहते हैं।

आज, गुरु पूजा के दिन मुझे यह कहना है कि व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना होगा। बहुत कठिन परिश्रम! सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कहाँ तक आपने अपना समय सहजयोग को समर्पित किया है ? तभी आप गुरु पद को पा सकेंगे। मेरी ओर देखें, मैं एक घरेलू स्त्री हूँ, मेरा परिवार है, जिम्मेदारियाँ हैं, समस्याएं हैं। परन्तु इसके बावजूद भी मैं हर समय सहजयोगियों, सहजयोग और विश्व भर के मानवों के उद्धार के विषय में सोचती रहती हूँ। न केवल किसी स्थान विशेष पर, विश्व भर में। तो आपका स्वप्न भी विशाल होना चाहिए– अपने स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। ऐसा विशाल स्वप्न कि अपने परिश्रम से आपने हर स्थिति में, सभी प्रकार की समस्याओं के बीच विकसित होना है। एक बार जब आपका इस प्रकार का व्यक्तित्व बन जाएगा तो, आप हैरान होंगे कि आप बहुत सी अच्छी चीज़ें घटित होने में सहायक होंगे।

मैं जानती हूँ कि यहाँ ऐसे बहुत से सहजयोगी हैं जो इसके योग्य हैं। मैं वास्तव में उनसे बहुत प्रेम करती हूँ तथा वे भी मुझे बहुत प्रेम करते हैं। क्योंकि अब आप गुरु पद प्राप्त करने वाले हैं। अतः आप को सावधान रहना है कि गुरु होने का गुमान आपको न हो जाए। कभी नहीं। यदि ऐसा हो गया तो 'गुरु' का अहँ आपमें जाग उठेगा। अतः आप निर्णय कीजिए कि " मैं कुछ भी नहीं! मैं कुछ भी नहीं! मुझे श्री माताजी के हृदय में केवल एक छोटा सा स्थान प्राप्त हुआ है।" यदि आपमें इतनी नम्र भावना है तो सभी समस्याएँ सुलझ सकती हैं और सभी कुछ घटित हो सकता है क्योंकि आपका चित्त तथा आचरण अवश्य लोगों को प्रभावित करेगा। इसके अतिरिक्त सभी कुछ निष्प्रभावी होगा। केवल आप ही अन्य लोगों के लिए सहजयोग ला सकेंगे। अच्छा गुरु बनने की विधियों के विषय में बहुत कुछ बताया जा सकता है। परन्तु मैं सोचती हूँ कि यह सब मैं आगामी गुरु पूजा के लिए छोड़ दूं।

आप सब को अनन्त आशीर्वाद।

श्री कृष्ण के १०८ नाम

श्री कृष्ण	वे आध्यात्मिकता की खेती उगाते हैं
श्रीधर	श्री शक्ति सम्पन्न
वेणुधर	दिव्य मुरली वादक
श्रीमान	वैभवपति
निर्मलगम्य	उन तक केवल श्री माता जी के माध्यम से ही पहुँचा जा सकता है।
निर्मलपूजक	वे श्री माता जी के पुजारी हैं
निर्मलभक्त प्रिय	वे श्री माताजी के भक्तों से प्रेम करते हैं
निर्मलहृदय	श्री माता जी के चरण कमलों का ध्यान वे अपने हृदय में करते हैं।
निराधार	उन्हें किसी आधार की आवश्यकता नहीं
विश्वधरजनक	वे ईसा मसीह के पिता हैं
श्री विष्णु	शिखण्डी मोर मुकुटधारी
महाविष्णु पूजित	ईसा मसीह उनकी पूजा करते हैं
विष्णुमाया सुघोषित	श्री विष्णुमाया स्वयं उनकी घोषणा करती हैं
वागेश्वर	वे भाषा के स्वामी हैं
वागेश्वरी भ्राता	वे महासरस्वती के भाई हैं
विष्णुमाया अनुज	वे विष्णुमाया के भाई हैं
द्रोपदी बन्धु	वे द्रोपदी के भाई हैं
पार्थ सखा	वे अर्जुन के सखा हैं
संमित्र	वे वास्तविक मित्र हैं
विश्वव्यापी	वे पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं
विश्वरक्षी	वे ब्रह्माण्ड रक्षक हैं
विश्वसाक्षी	वे ब्रह्माण्ड के साक्षी हैं
अमरीकेश्वर	वे अमरीकापति हैं।
महानील	वे नील वर्ण हैं।
पीताम्बरधारी	वे पीले वस्त्र धारण करते हैं।
सुमुख	सुन्दर मुख वाले।
सुहास्य	सुन्दर हँसी वाले।
सुभाष	सुन्दर वाणी वाले।
सुलोचन	सुन्दर नयनों वाले।
सुनासिक	सुन्दर नाक वाले।
सुदन्त	सुन्दर दांत वाले।
सुकेश	सुन्दर केशों वाले।
सुश्रुत	शुभ बातों को सुनने वाले।
सुदर्शनधारी	सुदर्शन चक्र धारण करने वाले
महावीर	महान योद्धा।
शौर्यदायक	वीरता प्रदान करने वाले।
रण–पण्डित	युद्ध विशारद।
रण–छोड़	विजय के लिए युद्ध से भाग खड़े होने वाले।
श्रीनाथ	वे परमचैतन्य के स्वामी हैं।
युक्तिवान	उन्हें युक्तियों का ज्ञान हैं।
अकबर	वे महानतम हैं।
अखिलेश्वर	वे पूर्ण ब्रह्माण्ड के ईश्वर हैं।
महाविराट	उनका अस्तित्व महानतम है, सभी कुछ उनका अंग–प्रत्यंग है।

द्वारकाधीश	वे द्वारका के शासक हैं	योगेश्वर	वे योगियों के ईश्वर हैं।
विशुद्धिप्रान्ताधीश	वे विशुद्धि प्रान्त के शासक हैं।	योगीवत्सल	योगियों को वे पिता सम प्रेम देते हैं।
जननायक	वे मनुष्यों के नायक हैं	योगवर्णितः	योग का वे लक्ष्य के रूप में वर्णन करते हैं।
विशुद्धि जनपालक	विशुद्धि प्रदेश में रहने वाले लोगों की वे रक्षा करते हैं।	सहज संदेशवाहक	उनके माध्यम से हम सहजयोग संदेश प्रसारित कर सकते हैं।
विश्वधर्म–ध्वजाधारक	वे विश्वधर्म की ध्वजा उठाए हुए हैं।	आनन्दाकार	वे आनन्द–मूर्ति हैं।
गरुड़ारूढ़	गरुड़ उनका वाहन है		
गदाधर	वे गदा धारण करते हैं	पवित्रानन्द	वे पावित्र्य का आनन्द हैं।
शंखधर	वे शंख धारण करते हैं	पावित्र्यरक्षक	वे पवित्रता की रक्षा करते हैं।
पद्मधर	वे कमल धारण करते हैं	ज्ञानानन्द	वे दिव्य ज्ञान का आनन्द प्रदान करते हैं।
लीलाधर	वे दिव्य लीला के संचालक हैं	कलानन्द	वे कला का आनन्द प्रदान करते है।
दामोदर	वे अति उदार हैं	गृहानन्द	वे गृह का आनन्द प्रदान करते हैं।
गोवर्धनधारी	गोपों की रक्षा हेतु उन्होंने गोवर्धन पर्वत उठा लिया	धनानन्द	वे वैभव का आनन्द प्रदान करते है।
योगक्षेमवाहक	वे योगियों को क्षेम प्रदान करते हैं	कुबेर	वे धन दौलत के ईश्वर हैं।
सत्यभाषी	वे सदा सत्य बोलते हैं	आत्मानन्द	वे आत्मा का आनन्दप्रदान करते है।
हितप्रदायक	वे हितकर हैं	समूहानन्द	वे सहज सामूहिकता का आनन्द प्रदान करते हैं।
प्रियभाषी	उनकी मधुर वाणी आत्मसुख प्रदान करती है	सर्वानन्द	वे सभी प्रकार के आनन्ददाता हैं
अभयप्रदायक	वे अभयदान देते हैं	विशुद्धानन्द	वे शुद्ध आनन्द के दाता हैं।
भयनाशक	वे भय का नाश करते हैं	संगीतानन्द	संगीत का आनन्द वे ही प्रदान करते हैं।
साधकरक्षक	वे सत्य–साधकों की रक्षा करते हैं	नृत्यानन्द	वे सामूहिक नृत्य का आनन्द प्रदान करते हैं।
भक्त वत्सल	वे भक्तों को प्रेम करते हैं	शब्दानन्द	शब्दों के माध्यम से वे आनन्द देते हैं।
शोकहारी	वे शोक नाशक हैं	मौनानन्द	वे मौन का आनन्द प्रदान करते हैं।

दुःखनाशक	वे दुःखों का नाश करते हैं	सहजानन्द	सहज संस्कृति के माध्यम से वे आनन्द देते हैं।
राक्षसहन्त्री	वे राक्षसों का वध करने वाले हैं		
कुरुकुल विरोधक	वे अधर्मी कुरुकुल विरोधी हैं	परमानन्द	वे परम–आनन्द के दाता हैं।
गोकुलवासी	वे गोकुल में निवास करते हैं	निरानन्द	विशुद्ध आनन्द के स्त्रोत वही हैं।
गोपाल	वे गउओं के पालक हैं	नाट्यप्रिय	वे लीला का आनन्द लेते हैं।
गोविन्द	गउएं उन्हें आनन्द देती हैं	संगीतप्रिय	वे संगीत का आनन्द लेते हैं।
यदु–कुल–श्रेष्ठ	यादव वंशियों में वे श्रेष्ठतम हैं	क्षीरप्रिय	दूध उन्हें बहुत पसन्द है।
अकुल	वे पारिवारिक बन्धनों से ऊपर हैं	दधिप्रिय	वे दही का आनन्द लेते हैं।
वंश–द्वेष नाशक	वे जाति वर्ण कौम के द्वेष (भेदभावों) नाशक हैं	मधुप्रिय	शहद उन्हें प्रिय है।
घृतप्रिय	घी उन्हें अच्छा लगता है		
आत्मज्ञान वर्णित	वे आत्मज्ञान का वर्णन करने वाले हैं	मातृचरणामृतप्रिय	श्री माताजी चरणकमलों का धोवन उन्हें बहुत प्रिय है।
आनन्द–प्रदायक	वे आनन्द–दाता हैं।	निराकार	वे आकार से परे हैं।

ईसा मसीह पूजा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
गणपति पुले 1996, 25 दिसम्बर

आज हम ईसा मसीह का जन्म दिन मना रहे हैं। उनका जन्म अत्यन्त प्रतीकात्मक है क्योंकि जिस तबेले में वे अवतरित हुए वहाँ तो एक दरिद्र भी जन्म न लेगा। उन्हें सुखे घास के बिस्तर पर लिटाया गया। वे पृथ्वी पर ये दर्शाने के लिए आये थे कि किसी अवतरण या महान विकसित आत्मा को शरीर के सुखों की कोई चिन्ता नहीं होती। उनका सन्देश अत्यन्त महान तथा गहन था परन्तु उनके शिष्य उस युद्ध के लिए तैयार न थे जो उन्हें करना था। सहजयोग में भी कभी–कभी ऐसा होता है। उनके केवल बारह शिष्य थे। हमारे यहाँ भी बारह प्रकार के सहजयोगी हैं। ईसा के शिष्यों ने यद्यपि स्वयं को ईसा के प्रति समर्पित करने का प्रयत्न किया फिर भी उनमें कुछ सांसारिक इच्छाओं तथा आकांक्षाओं के जाल में फँस गये।

प्रेम एवम् क्षमा का उनका सन्देश आज भी वही है, जिसकी शिक्षा सभी सन्तों, अवतरणों तथा पैगम्बरों ने दी है। सभी ने प्रेम एवम् क्षमा की बात की। जब जब भी इसे चुनौती दी गई या ये सोचा गया कि इससे कार्य न होगा तो लोगों को विश्वास रखने को कहा गया। परन्तु ईसा के समय के लोग बहुत ही सहज थे। अतः उन्होंने उनकी आज्ञा मानी। उनमें से कुछ तो बहुत ही अच्छे थे, कुछ अधपके थे और कुछ सन्देह से परिपूर्ण।

हमारे आज्ञा चक्र को विकसित करने के लिए ईसा मसीह पृथ्वी पर अवतरित हुए। परन्तु उनके इतने प्रयत्नों के बावजूद भी हम देखते हैं कि ईसाई लोगों में आज्ञा चक्र बहुत ही खराब है। वे अत्यन्त आक्रामक, योजनाएं बनाने वाले तथा भविष्यवादी हैं। ईसाई कहलाने वाले देशों में दायें पक्ष की सभी तकलीफें दिखाई देती हैं।

'प्रारम्भिक ईसाई, जो कि जिज्ञासु तथा ज्ञानी थे' उन्हें भी ईसाई मत के ठेकेदारों ने सताया। इस प्रकार चर्चों तथा पादरियों ने बहुत से लोगों का कत्ले आम करवाया। ये सब अब भी चल रहा है। पश्चिमी देशों में गिरिजा घरों का ये प्रभाव लोगों के मस्तिष्क पर अब भी बहुत अधिक दिखाई पड़ता है।

वैसे तो लोग अत्यन्त बुद्धिवादी, सूझबूझ वाले तथा बहादुर समझे जाते हैं परन्तु जब ईसाई मत के चर्चों या मन्दिरों की बात आती है तो एक प्रकार के सम्मोहन से उनके मस्तिष्क कार्य करना बन्द कर देते हैं। वे ये नहीं सोच पाते कि इन लोगों में भी बहुत सी कमियाँ हो सकती हैं। इटली में रहते हुए ये देखकर मुझे दुख हुआ कि किस प्रकार कैथोलिक चर्च सभी प्रकार के घोटाले कर रहा है। ये तो हमारे देश में होने वाले घोटालों से भी कहीं अधिक हैं। धन की हेराफेरी, स्त्रियों और बच्चों के साथ छेड़छाड़ तथा सभी प्रकार की बुरी आदतें! उनसे पादरी होने की आशा की जाती है, उन्हें 'पिता' (Father), माता, बहनें तथा भाई कहा जाता है। मुझे सदमा पहुँचा। मैं नहीं जानती थी कि किस प्रकार ईसा के नाम पर ये सभी कुछ हो रहा है। अपने जन्म से ईसा ने ये दर्शाने का प्रयत्न किया कि लंदन के किसी बड़े अस्पताल में अत्यन्त आरामदेह तथा वैभवशाली स्थान पर जन्म लेना आवश्यक नहीं। उनके जन्म की सादगी से तो सभी ईसाईयों

को धन लोलुप होने के स्थान पर अत्यन्त सादगीपूर्ण हो जाना चाहिए था। परन्तु धन के लिए वे चहुँ दिशाओं में गए और असंख्य लोगों का वध किया। आप यदि ब्राज़ील, चिली या अर्जेन्टीना जाएं तो आपको वहाँ के मूलवासियों में से एक भी व्यक्ति दिखाई न देगा, उनके प्रति वे अत्यन्त निर्दयी हैं। विश्वास नहीं होता कि किस प्रकार वो इतने आक्रामक हो सकते हैं! इंग्लैण्ड में, जहाँ कि प्रोटैस्टेन्ट लोग हैं, वहाँ भी मुझे यही चीज़ दिखाई दी। सुबह से शाम तक आप धन्यवाद, धन्यवाद, करते रहिए नहीं तो आप बचेंगे नहीं। जातिवाद। ईसा की कौन सी जाति थी ? क्या वह श्वेत थे ? नहीं। वह बिल्कुल श्वेत न थे। भारतीयों की तरह उनका रंग गेहुँआ था। तो इन पश्चिम के देशों में यह जातिवाद कहाँ से आया? इसका ईसाई मत से तो कोई सम्बन्ध नहीं है।

कहीं भी आप जाएं , यह देखकर आप हैरान होंगे कि किस प्रकार चर्च श्रद्धालु और सहज हृदय लोगों का दुरुपयोग कर रहे हैं! उनका उपयोग वोट लेने के लिए, धन बटोरने के लिए किया जा रहा है– ये सब इतना अधिक हो रहा है कि चर्च ने अरबों रुपये के नकली नोट बनाए। इतनी निरंकुशता , इतना प्रभुत्व, इतनी सत्ता शक्ति कि पोप जो चाहे करता रहे वह निरपराध है, उचित है। अपराध का, नर्क का, ईसा का कोई विचार ही नहीं। ईसा में पावित्र्य और अबोधिता के सिवाय कोई अन्य विचार ही न था। मन्दिर के सामने बैठकर परमात्मा का व्यापार करने वाले इन सब लोगों को ईसा ने अपने हाथों में हन्टर पकड़कर पीटा था क्योंकि उन्होंने तो कहा था कि परमात्मा को बेचा नहीं जा सकता। वो लोग परमात्मा को नहीं बेच रहे थे, केवल वस्तुएं बेच रहे थे परन्तु ईसा ने तो मन्दिर के सम्मान की बात की थी।

एक अन्य अपराध जो ईसाईयों ने किया वह था, ईसा के वध के लिए यहूदियों पर दोषारोपण करना। उन्होंने सारा दोष अन्य लोगों पर लगा दिया। आज भी अपने अपराधों का दोष दूसरों पर मढ़ देना ईसाईयों की विशेषता है। स्वयं को ईसाई कहने वाले देशों में आज भी आप यह चीज़ स्पष्ट देख सकते हैं। सम्भवतः उस समय जो लोग यहूदी थे बाद में भारतीय बन गए होंगे। वे पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते। दूसरे उस समय के यहूदी पुनःअवतरित हो गए हैं। तीसरे यहूदियों ने ईसा की हत्या नहीं की। इतनी बड़ी भीड़ में यह निर्णय कैसे किया जा सकता है ? जिस न्यायकर्ता ने इस बात का निर्णय किया और आज्ञा दी वह रोमन था। रोम साम्राज्य ईसा की मृत्यु के लिए जिम्मेदारी न लेना चाहता था अतः उन्होंने कह दिया कि यहूदियों ने ईसा का वध किया है। तो श्रीमान हिटलर खड़े हो गए और उन्हें खूब सताया। यह भयंकर अत्याचार था। समझ से बाहर की बात है कि कैथोलिक धर्म में विश्वास करने वाला व्यक्ति किस प्रकार जहरीले गैस–गृह में बच्चों की हत्या कर सकता है ? परन्तु जिन लोगों को सताया गया था वे भी अब अत्यन्त आक्रामक बन रहे हैं और फिलिस्तीनी लोगों के विरोधी हो गए हैं। फिलिस्तीनी लोग मूलतः मुसलमान हैं और मुसलमानों ने चहुँ ओर तबाही मचाई हुई है। इतिहास के पन्नों में ईसा के जीवन को खोजते हुए आप पाएंगे कि लोगों में अत्यन्त आक्रामकता थी। यदि कोई किसी को थप्पड़ मार दे तो वह उसकी हत्या करने की चेष्टा करेगा। इस धर्म ने यह फूट डालने की प्रवृत्ति की सृष्टि की है। धर्म और परमात्मा के नाम पर लोग एक दूसरे की हत्या कर रहे हैं। यहाँ तक कि सहजयोग में भी लोग मेरे नाम का लाभ उठा रहे हैं या एक दूसरे को वश में करने का प्रयास कर रहे

हैं। तो सावधान हो जाइये, आपके साथ ऐसा घटित नहीं होना चाहिए। परमात्मा के प्रेम के अवतरण ईसा मसीह के नाम का दुरुपयोग करते हुए वे सभी प्रकार के हिंसात्मक, घृणात्मक एवं धोखा धड़ी के कार्य कर रहे हैं। ये चीज़ एक व्यक्ति से दूसरे में पहुँचती है और सहजयोग में भी ऐसा ही हो रहा है। मैं यदि किसी व्यक्ति से कहती हूँ कि तुम अगुआ नहीं हो कोई अन्य व्यक्ति अगुआ है तो वह तुरन्त क्रोधित हो जाता है। वह भूल जाता है कि सहजयोग ने उसका कितना हित किया है। केवल मेरा इतना कहने से कि अगुआपन की शक्ति किसी और को दे दी गई है उसे बिल्कुल ख्याल नहीं रहता कि सहजयोग ने उसका कितना हित किया है और सहजयोग की सहायता से ही वह जीवित है। तो यह **अगुआपना लोगों के सिर पर सवार हो जाता है। सहजयोग आपको अगुआ बनाने के लिए नहीं है, नहीं, कभी नहीं। अपनी सुविधा के लिए हमने अगुआ बनाए हैं और यदि उनसे हमें असुविधा होती है तो हमें उन्हें बदलना होगा।** मात्र इतना ही, इतनी ही छोटी सी बात है। परन्तु अब भी प्रभुत्व का विचार मुझे लोगों में इतना अधिक नज़र आता है कि वे इसका दुरुपयोग किए ही चले जाते हैं। ऐसा सभी देशों में घटित होता रहा है और होता चला जा रहा है। यह अत्यन्त दुखद है। यह मेरे प्रयत्नों को फलीभूत कभी न होने देगा। " मेरा प्रयत्न पूर्ण का एकीकरण करना है उसे विभाजित करना नहीं।" जो भी कुछ गलत है, जो भी कुछ अपवित्र है वह मुझे बताया जाना चाहिए। चावल साफ करते हुए महिला उनके अन्दर मिले हुए सफेद पत्थरों को निकाल फेंकती हैं। पत्थर मिले हुए चावल नहीं पकाए जाते। ऐसे पत्थरों को निकालना होगा। कुछ लोग पत्थरों सम हैं उन्हें परिवर्तित नहीं किया जा सकता। नामदेव ने कहा कि ऐसे लोग उस मक्खी की तरह से होते हैं जो बार बार हमारे भोजन पर बैठकर हमें परेशान करती है और गलती से यदि यह हमारे पेट में चली जाए तो मरकर भी यह हमें कष्ट देती है। यह सब राक्षस हैं। यह कभी सहजयोग को नहीं समझ सकते, सदा हमें कष्ट पहुँचाने का प्रयत्न करते रहेंगे। परन्तु जिन लोगों ने सहजयोग प्राप्त कर लिया है उन्हें क्या करना चाहिए। क्या उन्हें भी ऐसी विधियाँ अपनानी चाहिएं ? मैंने कभी किसी को दोष नहीं दिया। जैसे लोग कहते हैं कि श्री माता जी उसने सहजयोग को बिल्कुल धन नहीं दिया इसलिए उसका सारा धन चला गया। मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। धन दान करने के लिए मैंने कभी नहीं कहा। मैं तो सदा यही कहती हूँ कि मत दो, यही काफी है। अपने लिए मैंने किसी से कभी भी एक पैसा नहीं माँगा। जब आवश्यकता थी तब भी नहीं।

ईसा के जीवन से व्यक्ति को समझना चाहिए कि उन्हें कोई समस्या न थी, वे निडर थे। वे जानते थे कि वे परमात्मा के पुत्र हैं। उन्होंने हर चीज़ का सामना किया। सूली का भी सामना किया। उनका सूली चढ़ना लोगों को अच्छा लगा या न लगा उन्होंने 'क्रॉस' उठाया। निःसन्देह यह स्वास्तिक का परिवर्तित प्रतीक है। परन्तु ईसा को तो अपना जीवन बलिदान करना पड़ा। उन्होंने हम सबके लिए अपना जीवन बलिदान किया ताकि हम आज्ञाचक्र को पार कर सकें। आपको यदि धिक्कारना ही है तो स्वयं को धिक्कारें दूसरों को नहीं। इसे हम अपना बलिदान कह सकते हैं जिसके द्वारा सहजयोगी के रूप में हम देखते हैं कि हम कहाँ हैं। मुझे बताया गया है कि ८०–९० सहजयोगियों को सम्मोहित कर लिया गया है। सहजयोगी किस प्रकार सम्मोहित हो सकता है ? क्या यह सम्भव है ? वे

ध्यान– धारणा नहीं करते होंगे अन्यथा वे इसमें नहीं फँसते। अब वे क्षमा मांग रहे हैं। मैं क्षमा करती हूँ परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वे ठीक हो जाएंगे। अब हम उन्हें और लोगों में नहीं मिला सकते। सड़े हुए सेबों को अच्छे सेबों में नहीं रखा जाता। विवेक का अभाव है। वे सड़े हुए सेबों की तरह हैं और जब तक मैं न कहूँ उन्हें बाहर रहना चाहिए। वे किसी सामूहिकता और पूजा में न आएं। स्वयं को शुद्ध करें। यद्यपि सड़ा हुआ सेब ठीक नहीं हो सकता, परन्तु वे ठीक हो सकते हैं। वे समझने का प्रयत्न करें कि वे सहजयोगी नहीं थे। सहजयोगी यदि सम्मोहित हो जाता है तो सहजयोग करने का क्या लाभ है ? आपकी कुण्डलिनी उठाने का क्या लाभ है ? इस मामले में पश्चिमी देशों के सहजयोगी कहीं अच्छे हैं।

हम सबके लिए प्रसन्नता की बात है कि ईसा उद्धारक के रूप में आए और उन्होंने हर सम्भव प्रयत्न किया। हमारे लिए तो यह बात ठीक है परन्तु उनका क्या हुआ ? हमने उन्हें क्या दिया। इसी प्रकार बहुत से सहजयोगी माँग करते रहते हैं कि श्री माताजी हम तो आप से मिल भी नहीं सकते, आपसे हाथ भी नहीं मिला सकते, आपके चरण भी स्पर्श नहीं कर सकते आदि आदि। इसपर मुझे हैरानी होती है। श्री माता जी आप ऐसा करें, आप ऐसा करें, हर समय मुझे भाषण देते रहते हैं। **आपके करने योग्य आवश्यक कार्य ध्यान–धारणा है और यह विश्वास करना है कि यह परमचैतन्य मेरी शक्ति है और मेरी शक्ति को आपने अपने अन्दर अनुभव किया है। आप मुझसे जितनी दूरी पर होंगे उतने बेहतर होंगे।** कुछ सहजयोगियों की माँग करने की प्रवृत्ति मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती। उन्हें जागृति प्राप्त हो चुकी है, यह कार्य वैसे कभी न होता।

आज हमें यह समझना है कि इतना महान अवतरण इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ। निःसन्देह वह आत्म साक्षात्कार भी दे सकता था। जिन लोगों ने उन्हें क्रूसारोपित किया उनकी कल्पना कीजिए! वे किस प्रकार आत्मसाक्षात्कार देते ? मान लीजिए कोई छुरा लेकर मेरे पास आ जाए तो क्या मैं उसे आत्म साक्षात्कार दे सकूंगी ? किसी ने उनकी बात नहीं सुनी, किसी ने उनके बारे में विचार नहीं किया। परन्तु आप ऐसा नहीं करेंगे, आपको आत्म साक्षात्कार मिल चुका है, आप पुनर्जन्मित लोग हैं, महान लोग हैं, आपमें शक्तियाँ हैं। उन शक्तियों का उपयोग करने के स्थान पर आप क्या कर रहे हैं? कितने लोग वास्तव में गम्भीरतापूर्वक सहजयोग में लगे हुए हैं ? अन्तर्दर्शन करें। उनके अपने व्यापार हैं, अपने कार्य हैं, वास्तव में कितने लोग सहजयोग में लगे हुए हैं ? ईसा के कुल १२ शिष्य थे और १–२ के सिवाय सभी पूर्णतया समर्पित थे। बिना आत्मसाक्षात्कार पाए उन्होंने स्वयं को ईसाई धर्म के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया और इसका प्रचार किया। उन्हें तो पूरी चीज़ों का ज्ञान ही न था। जो ईसाई उन्हें मिले वे भी धर्म परिवर्तित लोग थे। इसलिए यदि उन्होंने ईसा के अवतरण के प्रति न्याय नहीं किया तो यह बात समझ में आती है। परन्तु आप लोगों का क्या है – आप लोग जिन्हें पुनर्जन्म प्राप्त हो गया है, जिन्हें आत्मज्ञान मिल गया है, जिनके पास सारी शक्तियाँ हैं, और जो परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जुड़े हुए हैं! आप सभी शक्तियों का उपयोग कर सकते हैं। यह तो एक शक्तिशाली मशीन के चल पड़ने जैसा है। कुछ पहिए घूम रहे हैं, परन्तु बहुत से पहिए अभी भी रुके हुए हैं। आप लोग बहुत कुछ कर सकते हैं। मैं ईसाईयों को दोष नहीं दे सकती। उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं

हुआ। किसी पादरी ने उनके सिर में जल छिड़का और कह दिया कि तुम्हें दीक्षा प्राप्त हो गई है। परन्तु आप लोगों का क्या है ? आप लोगों के लिए मैं जीवित रही क्योंकि मैं चाहती हूँ आप परिपक्व हो जाएं। माँ का यही विचार है। बहुत से लोग परिपक्व हो गये हैं परन्तु अब भी बहुतों को परिपक्व होना है। **परिपक्वता का अर्थ नहीं कि आप में बड़े–बड़े भाषण देने की या बड़ी–बड़ी पुस्तकें लिखने की योग्यता हो। इसका अर्थ है कि आन्तरिक रूप से आप परिपक्व हों, आपका अपना व्यक्तित्व प्रेम और दैवी सुगन्ध में कुसुमित हो उठे।** मुझ में और ईसा मसीह में यही अन्तर है। ईसा ने कहा था, "**काफी हो चुका, मूर्ख लोगों की अब आवश्यकता नहीं है।**" मैंने ऐसा नहीं कहा, मैं जानती थी कि ये संसार कैसा है। मैं यह भी जानती थी कि इस संसार के साथ क्या घटित हो चुका है। आज का विश्व पहले से बहुत खराब है क्योंकि सभी नेता लोग परस्पर लड़े जा रहे हैं। सर्वप्रथम तो सभी राजनीतिज्ञ बुरी तरह से भ्रष्ट हैं। भ्रष्टता में आगे निकलने के लिए परस्पर होड़ लगी हुई है। सत्य और ईमानदारी का विवेक किसी को भी नहीं। सभी लोग विज्ञापन, समाचारपत्र तथा अन्य माध्यमों में फँसे हुए हैं, और इन सबका अत्यन्त भ्रष्टकर प्रभाव पड़ रहा है। इस सारी पृष्ठभूमि के बावजूद भी, मैं जानती हूँ ,वर्ष २००० तक विश्व भर में सहजयोग अत्यन्त महान आदर्श के रूप में उभर कर आयेगा (तालियाँ) आपने मुझे वाक्य पूरा नहीं करने दिया– यदि आप लोग वास्तविक सहजयोगी बन गये तो– आप सब। यहाँ उपस्थित आप सभी लोग। कोई बात नहीं यदि मैं आपके स्थानों पर जाकर व्यक्तिगतरूप से आपसे न मिल सकूं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, किसी चीज़ से कोई फर्क नहीं पड़ता। ईसा के शिष्यों ने इस प्रकार कार्य किया मानो ईसा कभी थे ही नहीं। यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आप लोग ही इस विश्व को मुक्त करने, इसका एकीकरण करने, इसमें शान्ति, आनन्द एवं प्रसन्नता लाने के लिए जिम्मेदार हैं।

अभी जब मैं आ रही थी तो लोगों ने मेरे सामने शॉल बिछा दिये। इसने मुझे उस समय का स्मरण करा दिया जब ईसामसीह आये तो उनका स्वागत करने के लिये खजूर के पत्ते ले आये और अपने शॉल उनके सम्मुख पृथ्वी पर बिछा दिये। और ईसा कहाँ पहुँच गये ? फाँसी के फंदे पर, क्रास पर, अपनी मृत्यु तक। **जब आप मेरे प्रति अपना प्रेम दर्शाते हैं तो आपको जानना होगा कि आपको सहजयोग के पूरे कार्य को प्रेम करना है। मेरे से कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध लाभ नहीं पहुँचाएगा।** ईसाई मत के प्रभाव में ये जो पश्चिमी देश हैं इनका पतन हो जाएगा, इनका पतन हो रहा है क्योंकि वहाँ सदाचार नहीं है। वहाँ पर व्यापारिक मंदी है तथा अन्य प्रकार की समस्याएं हैं। उनके बच्चे भटके हुए हैं, वे मद्यपान करते हैं, धूम्रपान करते हैं। यहाँ तक कि उनका प्रभाव हमें भी भ्रष्ट कर रहा है। यह सब ईसा विरोधी गतिविधि के सिवाय कुछ भी नहीं। ईसा विरोधी कौन है ? हमारे अन्तरनिहित एक ईसा विरोधी है जो पावित्र्य और ईसा प्रेम–विरोधी चीज़ों को स्वीकार करता है।

ईसा ने कहा था कि अपने पड़ोसी को भी वैसे ही प्रेम करो जैसे आप स्वयं को करते हो। पश्चिम में आपका यदि कोई पड़ोसी है तो बस हो गया काम। वह यह जानने का प्रयत्न करेगा कि आप कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, यह सब देखने के लिए वह एक दूरबीन ले आयेगा। आप यदि थोड़ा सा भी

शोर मचाते हैं तो हो गया आपका खात्मा। आप यदि गाना गाते हैं तो भी हो गई गड़बड़। इस नजरिये से भारतीय लोग कहीं अच्छे हैं। हमें शोर की समस्या नहीं हैं, इसका हम बुरा नहीं मानते। मैंने इसका कारण खोज निकाला है– पश्चिम के लोग तनावग्रस्त हैं इसलिये वे यह सब सहन नहीं कर सकते। परन्तु भारत के लोग तो ये भी नहीं जानते कि तनाव क्या होता है, अभी तक यह समस्या पश्चिम के स्तर पर नहीं उभरी है। यह रोग नहीं आया है। भारत के लोग स्टेशन के प्लेटफार्म पर सो जाते हैं, रेलगाड़ियाँ आती–जाती रहती हैं। मेरा एक पड़ोसी था जिसका नाम था श्री पीस(शान्ति)! मैं नहीं जानती कि किसने उसको ये नाम दिया। जीवन में ऐसे प्रतिवाद हैं। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार वे अपने पड़ोसियों से प्रेम करना सीखेंगे ? भारतीय लोग प्रेम कर सकते हैं, उनके साथ ऐसी समस्याएं नहीं हैं। कहीं यदि कीर्तन या संगीत हो तो सभी लोग इसमें भाग लेंगे, चाय आदि लाएंगे और संगीत का आनन्द लेंगे। परन्तु पश्चिम में सामूहिकता बहुत कम है। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार वे स्वयं को ईसाई कहते हैं! बस अच्छे–अच्छे कपड़े पहन कर वे चर्च जा सकते हैं। हमारे मेयर ने मुझे बताया कि हम ज़्यादा से ज़्यादा पन्द्रह मिनट बैठ सकते हैं और इसके बाद घड़ियाँ देखने लगते हैं। और ये लोग कई घंटो से किस प्रकार आपके साथ बैठे हैं ? मेरा कहने का अभिप्राय है कि पश्चिम के लोग सामूहिक नहीं हैं। बिना शराब के नशे में धुत्त हुए वे एक दूसरे से बातचीत नहीं कर सकते। हर समय वे थके रहते हैं। कहीं भी वे जाते हैं तो जमुहाइयाँ लेने लगते हैं। युवा लोग सदा सोचते ही रहते हैं। यह सोच आज्ञा चक्र से आती है तथा ईसा विरोधी गतिविधियों से। सोच,सोच! कल हम क्या करेंगे आदि–आदि। हमें आशा करनी चाहिये कि इस प्रकार के धर्म समाप्त हो जाएं। इन्हें अब जाना होगा। वे इस प्रकार से धर्मविरोधी स्वभाव से परिपूर्ण हैं कि आप उन्हें सहन नहीं कर सकते। इस प्रकार के सभी धर्मों को समाप्त कर देना अच्छा होगा।

ईसा का कौन सा धर्म था ? आपका धर्म सहज धर्म है जो कि शाश्वत है, पवित्र है और आपमें अन्तर्जात है। किसी और धर्म से आपका कोई सरोकार नहीं। अतः वर्ष २००० तक, मुझे आशा है, ये सब धर्म पृथ्वी से लुप्त हो जाएंगे। ये सब धर्म जो बिना वजह झगड़ रहे हैं और बिना किसी कारण के एक–दूसरे की हत्या कर रहे हैं। वे झगड़ना चाहते हैं, झगडा उन्हें अच्छा लगता है। किसलिये कुरान को बाईबल को या किसी अन्य चीज़ को दोष दिया जाए ? झगड़ना उन्हें अच्छा लगता है। वे भिन्न राष्ट्र, भिन्न समुदाय आदि चाहते हैं। एक बार यदि आप अलगाववाद शुरु कर दें तो आप पूर्णतः ईसा विरोधी हैं। सहजयोग में आपकी एक ही पहचान है आपका कोई भिन्न देश नहीं, कोई भिन्न संस्था नहीं। मेरे विचारों में भी ऐसा कुछ नहीं है। मैंने ऐसा कभी कुछ सोचा ही नहीं। हम सब एक ही माता–पिता के बच्चे हैं। स्वयं को अलग सोचना हमारा कार्य नहीं। अब भी मैं देखती हूँ कि बड़ी ही सुगमता से समूह बना लिए जाते हैं, कैसे ? जैसे महाराष्ट्र के लोग एक स्थान पर बैठेंगे। भारतीयों का भी अलगाववादी स्वभाव है, उत्तर भारतीय लोगों के भिन्न विचार हैं। आप इन्दौर आईए, क्यों ? क्या यह भारत का हिस्सा नहीं है ? वे दिल्ली नहीं आ सकते ? आप सभी गाँवो में जाईए, हर जगह जाईये । क्यों ? आज आप दिल्ली में जन्में हैं तो कल कहीं और आपका जन्म होगा। फिर एक और सिर दर्द है कि इस स्थान पर मेरा घर है। आप मेरे

यहाँ अवश्य आईये। एक बार जब ये काम शुरु हो जाता है तो आपकी छुट्टी हो जाती है। आप यदि अपने इर्द–गिर्द देखें तो आपको अपने देश के लोग नज़र आते हैं। सहजयोग में दूसरा कौन है ? हम सब एक हैं और यदि–आप मुझे और ईसा को प्रेम करते हैं तो यह एकता आपको सीखनी होगी। अब सहजयोग में इस समूह बनाने की प्रवृत्ति का अन्त करना होगा। हम सब की एक ही पहचान है, हम एक ही जीवन्त शरीर हैं, एक ही सुसंघटित शरीर हैं। हम यह नहीं कह सकते कि हम अलग हैं। क्या यह हाथ शरीर से अलग हो सकता है ? ऐसा करके क्या यह जीवित रह पाएगा ? एक बार जब आप इस प्रवृत्ति को त्यागने लगेंगे तो, आप हैरान होंगे, कि आपको वास्तविक आनन्द प्राप्त होगा। परन्तु यदि आप में 'मैं', 'मेरा', 'तुम्हारा' के विचार हैं तो सहजयोग का, या किसी अन्य व्यक्ति का भी , आनन्द नहीं ले सकते। मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, ये वो। आप में यह जागृति आनी आवश्यक है। बहुत से लड़कियों और लड़कों ने लिखा है कि हमें भारतीय वर चाहिएं। महिला की आयु ३५वर्ष है, अब उसके लिए मैं भारतीय पति कहाँ से खोजूं ? मैं तुम्हें चुनने का अधिकार देती हूँ, लेकिन मेरी भी तो स्वेच्छा है। मैं तुम्हारे विवाह नहीं कर सकती। यह मेरी स्वेच्छा है। आप जहाँ चाहें विवाह करने के लिए स्वतंत्र हैं। परन्तु इस प्रकार मैं आपके विवाह नहीं कर सकती। जहाँ भी आपको अच्छा वर मिले आप विवाह कर लें। बहुत सी भारतीय लड़कियों ने भारतीय लड़कों से विवाह करके बहुत कष्ट उठाये। इस बार हम एक भी हिन्दुस्तानी की हिन्दुस्तानी से शादी का प्रबन्ध नहीं कर पाये। यह असम्भव है। आप क्यों नहीं अपने समाज में या कहीं अन्यत्र अपने लिए वर खोज लेते ? भारत में इन चीज़ों पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। सभी लोग अपनी ही जाति में वर ढूंढने पर बल देते हैं। अब भारतीय ईसाईयों में एक अन्य जाति बन गई है, ये है 'दलित' ईसाई। एक बार जब आप ईसाई बन गए तो आप की कौन सी जाति रह गई। दलित ईसाई उच्च ईसाईयों में विवाह नहीं करेंगे और उच्च दलितों में। सप्ताह में एक बार सूट पहन कर चर्च जाएंगे, सूट अगर अपना न हो तो उधार लेकर पहनेंगे। भारतीय ईसाई सोचते हैं कि ईसा का जन्म इंग्लैण्ड में हुआ था। बिना सूट और टाई पहने आप चर्च नहीं जा सकते। विवाह के समय वधु के लिये अंग्रेजों की तरह वस्त्र पहनना आवश्यक है। वास्तव में ईसाईयों के लिए कपड़ों की चिन्ता अनावश्यक है। ये सब मूर्खता पश्चिम से आती है कि आप ऐसे कपड़े पहने, चम्मच यहाँ रखें, काँटा वहाँ रखे। क्या ईसा काँटे चम्मच से खाना खाते थे ? उनका तो जन्म ही नांद में हुआ था। कोई ईसाई यदि आपके घर खाने के लिये आता है तो पहले प्लेट को उठा कर देखेगा कि कौन सी कम्पनी की है। इतने मूर्ख लोग स्वयं को ईसाई कहते हैं। ईसा का तो जन्म नांद में हुआ था।

हमें उनके अवतरण की महानता को समझना चाहिए। जहाँ वे जन्में वहाँ एक तरफ तो गायें बंधी हुई थीं और दूसरी ओर बछड़े। ईसाईयों को आप तुरन्त पहचान सकते हैं। रविवार प्रातः आप उन्हें देखें। मेरे पिताजी ने इसका बहुत विरोध किया। मेरे पिताजी कुर्ता पहना करते थे क्योंकि ईसा कुर्ता ही पहनते थे, सूट नहीं। भारतीय लोगों में गरिमा का कुछ विवेक है। यहाँ पर मई की गरमी में सूट पहनने की क्या आवश्यकता है ? हम सहजयोगी हैं, हमें सर्वसाधारण व्यक्तियों जैसे सर्वसाधारण वस्त्र पहनने चाहिएं। परमचैतन्य के सिवाय हम किसको प्रभावित करना चाहते हैं ? ईसाई लोगों में बहुत बनावट है। वस्त्रों आदि पर उनका बहुत अधिक

ध्यान है। मैंने यह सब देखा है इसलिये आपको चेतावनी देना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ। ईसा विरोधी संस्कृति को न अपनायें। उन्होंने हर तरह से ईसा का अपमान किया। किसी भी प्रकार से आप जिएं , ईसा का अपमान न करें।

ईसा का संदेश क्या है ? कि सहजयोगी की गरिमा को बताने वाले अपने अध्यात्म और देवत्व को विकसित करें। वे आपके बड़े भाई थे। उनकी जीवन शैली का अनुसरण आपको करना चाहिए। उन्हें किसी चीज़ की कतई चिन्ता न थी, किसी काम धन्धे की चिन्ता न थी, इस सबसे वे मुक्त थे। उनके जीवन के बहुत से सुन्दर उदाहरण हैं। परन्तु ईसाईयों को देखकर अगर हम ईसा के जीवन के बारे में निर्णय करने लगें तो ये गलती होगी। वे किसी भी प्रकार से ईसा का अनुसरण नहीं करते। सहजयोगियों के रूप में हमारी संस्कृति भिन्न है। इस संस्कृति के अनुसार हम नैतिकता का सम्मान करते हैं, हममें गरिमा है, हमारा अपना व्यक्तित्व है, हम निर्भीक हैं, झूठ नहीं बोलते, धोखा नहीं देते, कोई हमें सम्मोहित नहीं कर सकता। इस संस्कृति को हम श्री माता जी की संस्कृति का नाम दे सकते हैं। यह किसी भी प्रकार से दिखावा या बनावटी चीज़ों को अपनाना नहीं है। सब कुछ परिवर्तित हो जाएगा, पूरा नज़रिया बदल जाएगा, पूरे विचार बदल जाएंगे, एक बार यदि आप इस बात को समझ लें कि आपको श्री माता जी की संस्कृति मिल गई है।

मैंने आपसे कभी उपहार नहीं मांगे। आपकी खुशी के लिए मैं उपहार स्वीकार कर लेती हूँ। परन्तु महाराष्ट्र के लोगों से अब मेरा अनुरोध है कि वे मुझे ओटि न दें। मुझे यह बहुत मिल चुकी। अब कोई भी व्यक्ति मुझे ओटि नहीं देगा। किसी का विवाह हो, किसी का बच्चा जन्में तो वे ओटि देते हैं। मुझे ओटि देने की कोई आवश्यकता नहीं। मंदिर जाकर आप अपनी ओटि दे सकते हैं जहाँ ये बार–बार बिकती है और इस प्रकार पुजारी लोग पैसा बनाते हैं।

ईसा के जन्म दिवस पर मुझे एक बात तो यह पूछनी है कि हमने ईसा को क्या दिया और दूसरा प्रश्न यह कि हम श्री माता जी को क्या देंगे ? मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। मैं स्वयं से पूर्णतः संतुष्ट हूँ। परन्तु मैं चाहती हूँ कि आप सहजयोग, सत्य और प्रेम के प्रति समर्पित हों तथा कानाफूसी करने वाले लोगों की तरह बातें न करें। यहाँ वहाँ कानाफूसी करना मुझे अच्छा नहीं लगता और यदि आप ऐसा करते हैं तो आपका पतन होगा। बुरी तरह से आपका पतन होगा, यह अंतिम निर्णय है, या तो स्वर्ग में जाएंगे या नर्क में। ऐसा होना शुरु हो चुका है, अब हमें देखना है कि आप कहाँ है। आपकी माँ के रूप में मुझे बार–बार आपको बताना पड़ता है , सुधारना पड़ता है कि आप याद रखें कि यह अंतिम निर्णय है। अतः ईसा विरोधी गतिविधियाँ अब न अपनाएं। जो भी गलती आप करते हैं उसको अपने अन्दाज में जाँचें और इसके लिये सबसे अच्छा तरीका यह है कि स्वयं को सहजयोग के प्रति समर्पित करें।

परन्तु सहजयोग से धन न कमायें और न ही सहजयोग में राजनीति बनायें। सहजयोग को एक विशाल वृक्ष बनायें, यह कार्य करेगा, आपमें शक्तियाँ हैं इसीलिये आप यहाँ हैं।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

पूजा के विषय में श्री माताजी का परामर्श

पूजा या प्रार्थना आप के हृदय में विकसित है। मन्त्र आपकी कुण्डलिनी के शब्द हैं। परन्तु यदि मन्त्रों का उच्चारण हृदय से न किया जाए या मन्त्रोचारण में कुण्डलिनी का सम्बन्ध न हो तो पूजा मात्र कर्मकाण्ड बन जाती है। हृदय में पूजा करना सर्वोत्तम है। पूजा में आपको पूर्ण श्रद्धा पूर्वक मंत्र कहने चाहिएं। श्रद्धा जब गहन हो जाए तभी पूजा करनी चाहिए क्योंकि तब हृदय स्वयं पूजा करता है। उस समय चैतन्य लहरियाँ बहने लगती हैं क्योंकि आत्मा से आवाज़ निकल रही होती है। लोग सुरा से अपने गिलास भर लेते हैं। आपकी पूजा भी ऐसी है। इसमें श्रद्धा आपकी शराब है और मन्त्रोच्चारण और पूजा आपका गिलास। सब कुछ भुलाकार जब आप उस सुरा को पीते हैं तभी आप आनन्द के सागर में गोते लगा सकते हैं। परन्तु जो आनन्द आप इस सुरा को पीकर प्राप्त करते हैं वह शाश्वत और सदा मिलने वाला है।

दूसरी बात जो आपको जाननी है वह यह है कि आपकी गुरु बहुत महान लोगों की माँ भी हैं। इस बात का विचार मात्र ही आपके गुरु तत्व को स्थापित कर देगा। मेरे कितने महान पुत्र हुए! वे कितने महान व्यक्तित्व थे। शब्द उनका वर्णन नहीं कर सकते, एक के बाद एक वे इतने अधिक हुए। आप भी उसी परम्परा से हैं, मेरे शिष्य उन्हें अपना आदर्श बनाए रखें। उनका अनुसरण करें, उनके विषय में पढ़ें, उन्हें समझें कि उन्होंने क्या कहा और किस प्रकार यह शिखर उन्होंने प्राप्त किये। उन्हें मान्यता दें, उनका सम्मान करें। आप अपना गुरु तत्व स्थापित कर सकेंगे। उनकी बताई गई सारी बातों को आत्मसात करें। उन पर गर्वित हों। लोगों की कही बातों से पथभ्रष्ट न हों। सारी जनता को हम अपनी ओर खींचने वाले हैं। सर्वप्रथम हमें अपना वज़न और गुरुत्व स्थापित करना है। जैसे माँ सबको अपनी ओर खींचती रहती हैं इसी प्रकार हम भी सबको अपनी ओर खींचेंगे। आज आपने अपने अन्दर अपनी आत्मा से वायदा करना है कि आप अपनी माँ की आशाओं के अनुसार एक योग्य गुरु बनेंगे।

अब भवसागर को स्थापित होना है। सर्वप्रथम आप अपने गुरु को जानें कि वे हर चक्र पर विराजित हैं। अपने इतने महान गुरु की कल्पना कीजिए। इससे आपको आत्मविश्वास प्राप्त होगा। इतने आश्चर्यजनक गुरु के कारण ही सब लोग सुगमता से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं। किसी धनी व्यक्ति के पास यदि आप भिक्षा लेने के लिए जाएं तो वह आपको दो पैसे भी नहीं देगा। परन्तु आपकी गुरु क्योंकि अत्यन्त शक्तिशाली हैं इसलिए आप इतनी सुगमता से सारी शक्तियाँ प्राप्त कर रहे हैं। अतः आपको इस उपलब्धि पर अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिए, अत्यन्त प्रसन्न और प्रफुल्लित कि आपके पास यह शक्तियाँ हैं। कम से कम वो लोग जो सहजयोग में हैं वे इस बात को विश्वस्त रूप से जान जाएंगे। जो लोग पहली बार मेरे भाषण में आए हैं वे थोड़ी सी उलझन में पड़ेंगे। आप सब लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि क्या है। अतः अपनी गुरु–शक्ति को समझने के लिए सबसे पहले यह

जान लें कि आपकी गुरु कौन हैं ? साक्षात आदि–शक्ति! हे परमात्मा! यह तो बहुत बड़ी बात है। तब अपने भवसागर को स्थापित कर लें।

एक गुरु, विशेषतया मेरे शिष्य, अपनी माताओं और बहनों के अतिरिक्त किसी अन्य के सामने सिर नहीं झुकाते। आपने देखा होगा कि आप भी ऐसा ही करते हैं।

आज गौरी का दिन है। गौरी ने कंवारी अवस्था में, श्री गणेश का सृजन किया। उसी प्रकार आपको भी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। ठीक उसी प्रकार! अतः आपको भी गौरी शक्ति का उपयोग अपने अन्दर करना होगा। आपको अपना हृदय स्वच्छ रखना होगा। आपका हृदय और विचार स्वच्छ होने आवश्यक हैं। आपका मस्तिष्क पवित्र होना चाहिए। निःसन्देह, भक्ति यह पवित्रता प्रदान करती है; परन्तु यदि आप के मस्तिष्क में कुछ भी बचा हुआ है तो मैं आपको बताती हूँ कि आज से तीन बातें घटित हुआ करेंगी। पहली, हमने विश्व निर्मला–धर्म चलाया है। आप श्री गणेश की दृष्टि में हैं, अपनी आत्मा के पथ प्रदर्शन में हैं, और सर्वशक्तिमान परमात्मा के आशीर्वाद में हैं। सावधान रहें क्योंकि एक बार जब आप इस स्थिति को पा लेते हैं तो आपको धर्म पर दृढ़ रहना होगा और धर्म के प्रति अत्यन्त ईमानदार होना होगा।

धर्म पर चलने का निर्णय यदि आपने कर लिया है तो आज से सावधान रहें, मर्यादाओं से यदि आप निकले तो आपको कुछ भी हो सकता है। जब तक आप सहजयोग की मर्यादाओं में, सीमाओं में रहेंगे तब तक आपको कोई हानि या आघात नहीं पहुँचा सकता। यदि आप मर्यादाओं में रहेंगे तो जीवन का आनन्द उठाएंगे। परन्तु सहजयोग की मर्यादाओं को यदि आप छोड़ देंगे तो भयंकर समस्याओं में फंस जाएंगे। अतः दूसरी बात जो मैं आपको बताना चाहती हूँ वह यह है कि बहुत समय पूर्व लोगों को जिस आत्मसाक्षात्कार का वचन दिया गया था वह दिव्य–दर्शन हमने आज शुरु किया है।

अपनी आत्मा बनिए, सभी कुछ बहुत अच्छा होगा। किसी बात से विचलित न हों, किसी चीज़ के लिए चिन्तित न हों। पूर्णतः शान्त रहने का प्रयास करें। **यह देखने के लिए कि आप कितना अपनी आन्तरिक शान्ति की अवस्था में रहते हैं, मैं आपकी परीक्षा लेती रहती हूँ।** आपने यदि कोई अपराध नहीं किया तो ठीक है। जब आपने कोई बुराई नहीं की तो चिन्ता की कोई बात नहीं। और यदि आपने कोई अपराध कर भी दिया है तो परमात्मा क्षमा के सागर हैं। अतः किसी प्रकार की चिन्ता न करें। पूर्ण दृढ़ता एवं साहस के साथ दिव्य–दर्शन के उस वचन को आगे बढ़ायें।

तीसरी बात यह है कि सब कुछ जो हम कर रहे हैं इसके साथ साथ परमात्मा से वायदा करें कि पूरी सूझ बूझ से हम सहजयोग को समझेंगे; इसके एक एक शब्द को पढ़कर हम सहजयोग के ज्ञान में प्रवीणता प्राप्त करेंगे। हम स्वयं को स्वच्छ रखेंगे तथा अपना जीवन पूर्णतया सहजयोग को समर्पण करेंगे। अपने हृदय में आपने इसके लिए वचन बद्ध होना है। सहजयोग को समर्पित होना, वास्तव में आनन्द , आशीष और शान्ति को समर्पित होना है। इसमें आपका लाभ है और किसी की हानि नहीं। अतः आज हमने सदा के लिए इस बात का निर्णय लेना है।

अब मैं देखती हूँ कि सहज योग एक नया मोड़ लेने वाला है। हम एक ऐसी अवस्था तक पहुँचने वाले हैं जहाँ हजारों लोग हमारे साथ

सम्मिलित हो जाएँगे। परन्तु सर्वप्रथम, जो लोग आधार शिलाओं में है, जो पहले लोग हैं, अपने मूर्खतापूर्ण लालच, सभी प्रकार के मूर्खतापूर्ण कार्य, जो आज तक आप करते रहे और असहज हैं, उनसे ऊपर उठने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आपकी भाषा मधुर होनी चाहिए तथा व्यवहार बहुत ही अच्छा, नम्र और कोमल। आपको एक योगी की तरह चलना चाहिए, एक सन्त की तरह जीवन व्यतीत करना चाहिए, ताकि आपके माध्यम से लोग सहजयोग की महानता को देख सकें।

जब मैं इटली में थी तो मैंने कहा कि इंग्लैंड पूरे ब्रह्माण्ड का हृदय है, तो वे लोग इस बात को स्वीकार न कर पाए। इस कथन से उन्हें बहुत धक्का लगा। वे विश्वास न कर पाए कि इंग्लैंड भी ब्रह्माण्ड का हृदय हो सकता है! इसका एक कारण यह था कि एक बार रोमन लोगों ने अंग्रेज़ लोगों पर आक्रमण किया था और उस समय रोमन लोगों को ये लगा कि अंग्रेज़ अत्यन्त अहंकारी हैं। अपनी पराजय को भी वे सम्मानपूर्वक स्वीकार न करेंगे। पराजित होकर भी वे अत्यन्त अहंकारी हुआ करते थे। यदि हृदय की ये अवस्था है तो ब्रह्माण्ड की क्या अवस्था होगी ? तब उन्होंने अंग्रेज़ों के अहंकार को मेरे सामने विस्तारपूर्वक वर्णन किया और मुझे लगा कि मैं भी इसी प्रकार की कुछ बातों से परिचित हूँ।

अब हृदय की वह उच्चावस्था प्राप्त करना सम्भव है। क्योंकि आप लोग इंग्लैंड की विशिष्ट भूमि पर उत्पन्न हुए हैं, वह सम्भावना अवश्य ही आपको अन्दर बनी हुई होनी चाहिए। तो फिर कमी क्या है ? ऐसा क्यों है कि सारी सम्भावनाओं, महान पृष्ठ–भूमि और सारी विशेषताओं के होते हुए भी हम पाते हैं कि सहजयोगी वर्षों तक भी अन्य सहजयोगियों की उच्चावस्था को नहीं पा सकते ? क्या कारण है ? हृदय को यदि आप देखें तो इसमें धड़कन की एक गति है और यह एक विशेष प्रकार की आवाज़ से चलता है। आप इसे लेखाचित्र (ग्राफ) पर ला सकते हैं, यह अत्यन्त सुव्यवस्थित, नियमित और अनुशासित है। कोई धीमी सी आवाज़ या हल्का सा परिवर्तन भी लेखाचित्र पर दिखाई पड़ता है। यह इतनी संवेदनशील वस्तु है। और यहाँ पर इसी की कमी है, हृदय के अनुशासन की।

आज जब हम महानतम, नवरात्रि का उत्सव मना रहे हैं तो इसमें कुछ विशेषता तो होनी चाहिए। आज हमें यह हृदय पूर्णतया स्वच्छ करके इसे इतना पवित्र कर देना है कि यह इसके अन्दर से बहकर पूरे शरीर में जाने वाले सारे रक्त को पवित्र कर दे। जिन कोषाणुओं से हृदय शरीर बना है उनका सर्वोत्तम होना आवश्यक है क्योंकि मानव शरीर में हृदय के कोषाणु उच्च कोटि के तथा संवेदनशील होते हैं। हृदय ही 'अनहद' की अभिव्यक्ति करता है अर्थात् बिना आघात के उत्पन्न हुई आवाज़ की अभिव्यक्ति। हम पाते हैं कि कुछ लोग तो योग्य हैं परन्तु कुछ अन्य बातें और दिखावा तो अधिक करते है परन्तु योग्य नहीं होते। अतः इस हृदय को स्वच्छ करें, सर्वोत्तम कोषाणु बनें।

अनियमित, अनुशासनविहीन हृदय अहम् को बढ़ावा देता है। आप जो भी लोगों को बताते रहें, समझाते रहें, उस समय वे आपको गम्भीरतापूर्वक सुन लेते हैं परन्तु अगले क्षण आपकी बात का उन पर कोई असर नहीं रहता। तो एक अन्य चीज़ जो हमनें देखनी है वह है अपने अन्तर–अनुशासन की कमी। उस अनुशासन को हमें लाना होगा नहीं तो हमारी योग्यता न बढ़ पायेगी। परन्तु मैं सोचती हूँ कि इसके लिए हमारे अन्दर अन्तर्जात बुद्धि होनी

चाहिए। शिक्षा नहीं, अन्तर्जात बुद्धि, यह समझने के लिए कि हमें सारी योग्यता को सुधारना है। अब यहाँ हमारी आत्मा धड़कती है शक्ति नहीं। साक्षी–जो देख रही है–वह परमात्मा का प्रतिबिम्ब है, जो कि देवी के कार्य का दर्शन है। वास्तव में उस अवस्था तक उन्नत हुए बिना यदि हम कहें कि हम भी आत्मा को देख रहे हैं तो हम वह योग्यता नहीं प्राप्त कर सकते। सारे आशीर्वादों–जैसे हृदय के सात परिमलों (औराज़) की तरह हमें सात चक्र प्राप्त हुए हैं। हम नहीं समझते कि हम सबको स्वयं को अनुशासित करना है। केवल लाभ उठाने के लिए या यह दावा करने के लिए कि आप एक सहजयोगी हैं, यदि आप सहजयोग में हैं तो यह हृदय का कोषाणु होने को चिन्ह नहीं।

अब चेतावनी देना आवश्यक है। इस अवस्था में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि **अब सहजयोग उड़ान भर रहा है, याद रखें कि गति प्राप्त कर ली गई हैं और अब यह उड़ान भर रहा है। जो लोग पीछे छूट जाएंगे वे छूट जाएंगे।** अतः अहंकार में न फंसे। आपका चरित्र पहले स्थान पर है– क्योंकि सभी लोग कहते है "वे अत्यन्त अहंकारी है।" नम्र बनकर समझें कि आपको यान के अन्दर होना है, पीछे पृथ्वी पर नहीं रह जाना। यान द्रुतगति से चल रहा है।

अभी मैं दो उच्चतम् चक्रों के विषय में बात नहीं कर सकती परन्तु हमें कम से कम सात चक्रों की बात तो करनी चाहिए। क्या इन चक्रों की शक्ति हम अपने अन्दर विकसित कर चुके हैं ? हम ऐसा किस प्रकार कर सकते हैं ? आपके पास समय नहीं है। आप सब व्यस्त लोग हैं। और अहंकारी। इन शक्तियों को विकसित करने के लिए अब हमें अपना चित्त इन चक्रों पर केन्द्रित करना होगा। जहाँ कहीं भी मैं गयी, जो प्रश्न मुझसे पूछे गए और जिस प्रकार के लोग मुझे मिले, मैं आश्चर्य चकित रह गयी। किसी ने मुझसे अपने परिवार, घर, नौकरी या बेकारी आदि किसी व्यर्थ की चीज़ के बारे में नहीं पूछा। उन्होंने केवल ये पूछा कि श्री माताजी किस प्रकार हम फलां चक्रों की शक्ति को विकसित करें ? और मैंने उनसे पूछा कि आप किसी चक्र–विशेष की बात क्यों कर रहे हैं ? कहने लगे कि "हमें लगता है कि हममें यह कमी है, विशेषकर के मेरा यह चक्र ठीक नहीं है।"

अब सबसे अधिक सौभाग्यशाली बात यह है कि आज नवरात्री है और मैं लन्दन में हूँ तथा नवरात्रि पूजा भी यहाँ होनी चाहिए। कोई अन्य देश इतना भाग्यशाली नहीं क्योंकि यह महानतम पूजा है, महानतम कार्य, जिसमें आप उपस्थित हो सकते हैं। हम नवरात्रि क्यों मनाते हैं ? हृदय में नवरात्री पूजा का अर्थ है सात चक्रों के अन्दर निहित शक्ति की अनुभूति करने के लिए आदि–शक्ति को स्वीकार कर लेना। जब यह चक्र जागृत हो उठते हैं तो आप किस प्रकार अपने अन्दर इन नौ चक्रों की शक्ति की अभिव्यक्ति करते हैं। सात चक्र तो यह है और इनसे ऊपर दो चक्र और हैं, जैसा कि हैरानी की बात है, ब्लेक ने स्पष्ट कहा कि "नौ चक्र हैं।"

एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को अनुशासित करने या सब बताने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि अब आपसे इस लहज़े में बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता परन्तु मुझे लगा कि यदि आज मैंने आप को चेतावनी नहीं दी तो कभी आप मुझे दोष देगें। इसे गम्भीर चेतावनी समझें। आत्मसाक्षात्कार देने के बाद अब तुम्हें अनुशासित करने की मुझे बिल्कुल आवश्यकता नहीं क्योंकि आप को प्रकाश मिल गया है, आप जानते हैं कि आत्म साक्षात्कार

क्या है, आप आत्मसाक्षात्कारी होने का अर्थ जानते हैं; और आप यह भी जानते हैं कि आपको इससे कितना लाभ हुआ है तथा आपका व्यक्तित्व कितना निखरा है। परन्तु अभी भी करने कों कुछ शेष है। आपको स्वयं देखना है कि क्या वास्तव में आपने स्वयं को अनुशासित कर लिया है या नहीं। किसी अगुआ, आश्रम के साथी या किसी अन्य को आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं। आप आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति हैं, आप अपने स्वामी हैं, अपने गुरु हैं। कल्पना कीजिए कि आप सब गुरु हैं, महान गुरु, सद्गुरु हैं, सम्मानजनक सन्त है जिन पर सभी देवताओं ने पुष्प बरसाने हैं। इसकी कल्पना करें! लकिन आप तो अक्खड़ता पूर्वक भाषण दे रहें हैं तथा बातें कर रहें हैं! देवताओं को भी लज्जित करने वाली बात हैं। उनकी समझ में नहीं आता कि क्या करें, आपको पुष्प माला अर्पण करें या आपका मुँह बंद कर दें! आप यहाँ इतनी महान स्थिति में हैं कि आपको आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो गया है। आपने केवल इस महायोग के सौन्दर्य को स्वीकार करना है, सातों चक्रों पर विद्यमान अपनी शक्तियों को ज्योतिर्मय करना है।

अज्ञानी लोगों की बात तो मुझे समझ आती है। परन्तु उस अज्ञानता में वे किस प्रकार अबोधिता की बात करेंगे ? पर आप लोग तो मूर्ख नहीं हैं। आप तो ज्ञानी हैं, आपको आत्म साक्षात्कार मिल चुका है। अबोधिता की शक्ति अति महान है। यह आपको अत्यन्त निडर बनाती हैं, अहंकारी नहीं, निडर। अबोधिता की सबसे बड़ी महानता यह है कि यह सम्माननीय होती है। **सम्मान विवेक यदि आपमें विकसित नहीं हुआ है, सहजयोगियों, अन्य लोगों, आश्रम अनुशासन तथा स्वयं के लिए यदि आप सम्मानभाव विकसित नहीं कर सके तो सहजयोग की बात तक करना व्यर्थ है। सम्मान–भाव तो इसकी शुरुआत है।** ठीक है कि पहले आप सम्मान नहीं करते थे, अहँकारी थे, मूर्खता के नशे में रहते थे; सब क्षमा कर दिया गया। पर प्रकाश मिलने के बाद आप उन सारे सांपों को छोड़ दें जिन्हें अब तक पकड़े हुए थे। यह इतनी साधारण बात है।

आइए प्रथम चक्र को देखें। यह श्री गणेश की माँ गौरी की शक्ति से सम्बन्धित है। गौरी की शक्तियाँ कितनी आश्यर्च चकित करने वाली हैं ? उनकी शक्तियों के कारण ही आपको आत्म साक्षात्कार मिला। हमने उस शक्ति को अपने अन्दर स्थापित करने के लिए क्या किया ? आज नवरात्रि के प्रथम दिन हमें देखना चाहिए कि हमने क्या किया ? क्या हम अपने अन्दर अबोधिता उत्पन्न कर सके ? बातचीत करते हुए लोग अत्यन्त कटु होते हैं। आप यदि अबोध हैं तो आपमें कड़वाहट कैसे आ सकती है ? वे अत्यन्त अक्खड़ हैं। अबोध व्यक्ति कैसे अक्खड़ हो सकता है ? लोग खेल खेलते हैं। आप यदि अबोध हैं तो आप यह कैसे कह सकते हैं? अतः आपको स्वयं देखना होगा कि यदि अबोधिता की शक्ति को जीवित रखना है तो बाकी सारी मूर्खताओं को त्यागना होगा। आप यदि अबोधिता चाहते हैं तो अबोधिता–विरोधी हर बात को छोड़ना होगा।

बाल–सुलभ स्वभाव में ही आप गौरी के आशीर्वाद को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा आपको यह सब बताना व्यर्थ है क्योंकि आप तो स्वयं को चतुर समझते हैं। चतुर व्यक्ति से बात करने का क्या लाभ है ? वो तो पहले से ही सब जानता है। अतः विकसित होते हुए सर्वप्रथम आप पृथ्वी माँ पर बैठना सीखें। धरा माँ का सम्मान करें क्योंकि पहला चक्र

पृथ्वी तत्व से बना है। पृथ्वी पर आराम से बैठना सीखें और पृथ्वी का सम्मान करना भी। पेड़ों पर जब फूल आते हैं तो पेड़ इतने सम्मानमय नहीं होते पर जब पेड़ फलों से लद जाते हैं तो पृथ्वी माँ के सम्मुख झुक जाते हैं। इसी प्रकार सहजयोग के फल पाकर आपको भी नम्र हो जाना चाहिए।

अबोधिता में व्यक्ति को शान्त करने की शक्ति है। 'अत्यन्त शान्त'। क्रोध और हिंसा विहीन। अबोधिता विहीन व्यक्ति में शान्ति नहीं आ सकती। ऐसा व्यक्ति या तो धूर्त होता है या आक्रामक। उसका हृदय अशान्त होता है। पर अबोध व्यक्ति निश्चिंत होता है और निश्छल जीवनयापन करता है। पूर्ण शान्ति पूर्वक रह कर हर चीज़ का आनन्द लेता है। चतुराई व्यक्ति को हिंसक बना देती है। स्वयं को अति चतुर मानकर वह अन्य लोगों को मूर्ख समझता है तथा उनपर चिल्लाना अपना अधिकार । कपटी व्यक्ति कभी बुद्धिमान नहीं होता चाहे देखने में ऐसा प्रतीत होता हो। अबोधिता ही विवेक का दाता है। आप लोगों ने कितना विवेक प्राप्त किया? व्यक्ति को इसका ध्यान रखना चाहिए।

हमें देखना चाहिए कि क्या हम स्वयं को अनुशासित कर पाये हैं ? अपने अनुशासन से ही हमारा उत्थान होता है। हमें बहुत विकसित होना है। अहंकार ग्रस्त व्यक्ति इस बात को नहीं समझते कि उन्हें ऊपर उठना है, अभी तक उनका उत्थान नहीं हुआ। अभी आपको बहुत ऊपर उठना है। उत्थान होने पर आपका विवेक करुणा की सुगन्ध से महक उठता है।

अबोधिता की शक्ति बढ़ने पर विवेक दिखाई पड़ता है। लोग कहते हैं, " वह व्यक्ति अत्यन्त विवेकशील है। उदाहरणार्थ यदि कोई अपनी पत्नी के लिए रो रहा हो तो बुद्धिमान व्यक्ति कहेगा, "ओ बाबा! इसकी ओर देखो, अभी तक अपनी पत्नी की चिन्ता में लगा है।" इन चीज़ों का कोई अन्त नहीं। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो सहजयोग पर एक एक घंटे का लम्बा भाषण दे सकते हैं। उसके बिना उन्हें लगता ही नहीं कि उनके अँह की तुष्टि हुई है। परन्तु विवेकशील व्यक्ति को कुछ कहना नहीं पड़ता। मौन से ही वह अपने विवेक की छाप दूसरे लोगों पर छोड़ता है।

आपको स्वयं को समझना है, केवल स्वयं को। अतः सबको प्रतिदिन ध्यान करना है। यही अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है जिसे उन देशो के सभी लोग कर रहे हैं जहाँ मैं नहीं होती। क्योंकि अगर मैं इंग्लैंड में हूँ तो वहाँ के लोग कहेंगे, "माँ सब कुछ कर रही हैं।" अतः मैं प्रातः चार बजे उठती हूँ, स्नान करती हूँ और आप सबके लिए ध्यान करती हूँ। अच्छा हो कि मैं एक बार फिर से यह शुरु कर दूँ। क्योंकि आपके पास तो ध्यान करने के लिए समय ही नहीं है। कम से कम मैं तो आपके लिए ध्यान करुँ। **अतः आप आज मुझे वचन दें कि आप प्रतिदिन ध्यान करेंगे। प्रातःउठें।** "हम सुबह उठ नहीं सकते।" पूरा विश्व उठ सकता है तो अंग्रेज़ क्यों नहीं उठ सकते ? वाटरलू के युद्ध में तो वे सबसे पहले पहुँच गए थे। समय की पाबन्दी के कारण ही उन्होंने लड़ाई जीती। उनकी उस पाबन्दी को आज क्या हो गया ? हम शराब नहीं पीते, उसका असर हम पर नहीं होता, रात को हम देर से नहीं सोते! तो क्यों न आज हम निर्णय करें कि "हर रोज प्रातः जल्दी उठकर मैं ध्यान करूंगा ध्यान करते हुए मैं अपने पर चित्त दूँगा दूसरों पर नहीं। और स्वयं देखूंगा कि मैं कहाँ पकड़ रहा हूँ और मुझे क्या करना है ?"

अतः आज नवरात्रि के प्रथम दिन हमारे

अन्दर गौरी की शक्तियाँ प्रज्जवलित होनी चाहिएं और उनकी अभिव्यक्ति भी होनी चाहिए। ये शक्तियाँ असीम हैं। मैं इनका वर्णन एक भाषण में नहीं कर सकती। आदि–कुण्डलिनी के बारे में सोचें। वह पृथ्वी माँ, पूरे ब्रह्माण्ड, पशुओं, भौतिक पदार्थों, मानवों में कार्यान्वित हैं। और अब वह आप में कार्य करती हैं कि आपको शक्लो–शरीर प्राप्त होंगे। वहीं निर्णय करती है कि आपको कौन सा बच्चा मिले। वही आपको इच्छित बालक प्रदान करती हैं। उन्होंने ही आपको ये सारे सुन्दर बालक प्रदान किये हैं। उन्होंने ही यह दैदीप्यनान चेहरे और आँखें आपको दीं हैं। उन्होंने यह सब आपके लिए किया। परन्तु आपने अपने अन्दर की इस शक्ति की कितनी अभिव्यक्ति की ?

आज सहजयोगी पूरे ब्रह्माण्ड तथा मानव जाति के उत्थान के प्रतिनिधि हैं। क्या आप इस बात को समझ गए हैं कि संकट के समय में, जब कि संसार विनाश के कगार पर खड़ा है, आप इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ? विलियम ब्लेक जैसे महान दृष्टाओं ने इस समय की बात की। उन्होंने इसे बनाया। परम्परागत रूप में हमने यह सब बनाया। सन्तों के कार्य ने ही इंग्लैंड के सहजयोगियों की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण बनायी है ? परन्तु विवेक के अभाव में, अक्खड़पने से, तथा आत्मा को समझे बिना आप कैसे इतनी ऊँची बात कर सकते हैं ? आप स्वयं जब तक इतने दुर्बल तथा अहँकारी हैं तो सारी चीज़ों की व्यवस्था किस प्रकार कर सकते हैं ?

निःसन्देह आदिशक्ति कठोर परिश्रम कर रही हैं। परन्तु आप लोग, जिनकी कुण्डलिनी जागृत हो गई है, क्या कर रहे हैं ? आपने बाह्य जगत में आदिशक्ति के विषय में कितनी बात की ? कुण्डलिनी क्या है ? जैसे आप सर्व–साधारण रूप में जानते हैं, यह 'शुद्ध इच्छा है'। अतः स्वयं को पूर्णत्व तक विकसित करने की शुद्ध इच्छा करें। वास्तव में यदि यह सच्ची इच्छा है तो कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं। बाकी सभी इच्छाएं दूसरे तथा तीसरे दर्जे की (गौण) हैं। उत्थान की इच्छा ही सर्वोपरि है। किसके हित के लिए? यह आपके हित के लिए है! यह आपके हित के लिए है और आप ही के हित में पूरे विश्व का हित निहित है।

अतः आज मैं गिनती नहीं करूंगी कि कितने लोग प्रतिदिन ध्यान करते हैं और कितने नहीं करते। **मैं आपको केवल इतना बता सकती हूँ कि जो लोग प्रतिदिन ध्यान नहीं करते, अगले वर्ष वो यहाँ नहीं होंगे। मेरी बात समझ लें, यह सत्य है।** प्रतिदिन ध्यान अवश्य करें। स्वयं को अनुशासित करें। एक नये स्वप्न को जब आप देखते हैं, इसे समझते हैं तो आप दूर नहीं खड़े रह सकते .... इसमें उतरें।

सभी लोग कहते हैं कि श्री माताजी आप ने इन अंग्रेज़ों के लिए बहुत समय खर्च किया है। उनके लिए इतना समय क्यों खर्च किया ? हो सकता है कि आप लोग स्वयं को बहुत महान समझ रहे हों! जैसे मर्ज़ी सोचिए। पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपका देश हृदय–भूमि है इसलिए मुझे दूसरों की अपेक्षा आपको अधिक शुद्ध करना पड़ता है। परन्तु परिणाम उल्टा है। दूसरे लोग बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं। उनकी लहरियाँ, उनकी संवेदना, उनकी सूझबूझ , जोकि उन्होंने अभी–अभी प्राप्त की है, उसको देखकर मुझे आश्चर्य होता है। परन्तु यहाँ पर यह बड़ी केन्द्रीय सी चीज़ बनती जा रही है, सभी लोग सहजयोग को समझना नहीं चाहते, वे केवल भाषण देना चाहते हैं। बड़ों के लिए कोई

सम्मान नहीं है। जिन्होंने पहले आत्म साक्षात्कार प्राप्त किया वे स्वयं को बहुत ऊँचा समझते हैं। उन्हें ईसा का कथन याद रखना चाहिए कि **"पहला ही अन्तिम होगा।"** अतः समझने का प्रयत्न करें कि आपको ही विकसित होना है और आपने ही शक्तियों की अभिव्यक्ति करनी है। शक्तियों की अभिव्यक्तियों को मैं नहीं जान पाई, आप कहाँ तक समझ सके हैं ?

यहाँ इंग्लैंड में लोग कहते हैं, "मैंने उस व्यक्ति को छू लिया और अब मेरा अहँकार बढ़ गया है।" संवेदनशील होने का ये तरीका नहीं हैं। आपको परमात्मा के प्रति संवेदन–शील होना है बुरी चीज़ों के लिए नहीं। परन्तु परमात्मा से एकाकारिता के स्थान पर हम बुरी चीज़ों के सम्मुख बहुत दुर्बल हैं। अतः अच्छाई को समझने की शक्तियाँ आपकी पहुँच में हैं। यह शक्तियाँ मात्र प्रशंसा बनकर नहीं रह जानी चाहिएं, यह एक प्रकार की चुनौती, एक प्रकार की सुन्दर जिज्ञासा और विकास बन जानी चाहिएं। जिन लोगों ने स्वयं को केवल लेबल लगाए हुए है उन्हें चेतावनी देनी होगी और बाद में उन्हें वर्जित कर दिया जाएगा। यहाँ पर चैतन्य लहरियों की दशा देखकर और अन्य चीज़ों को देखकर मुझे खेद होता है। आप लोग नहीं जानते कि इंग्लैंड के लोगों का सहज के प्रति पिकनिक जैसा रवैया देखकर मुझे बहुत दुख होता है। आपके प्रयत्नों की सराहना करने के लिए मैंने बहुत कोशिश की और सदा इसमें लगी रही। आप अब अपने अन्दर झाँकिए।

जिस व्यक्ति में गौरी की शक्ति है वो जब किसी स्थान पर प्रवेश करता है तो प्रणाम करने के लिए सबकी कुण्डलिनी उठ जाती है। जब आपमें गौरी की शक्ति आ जाती है तो आप विशेष बन जाते हैं क्योंकि आपमें पवित्र, अबोध, सुन्दर लालच–विहीन दृष्टि आ जाती है, आपकी आंखों में एक ऐसी चमक आ जाती है कि आपके कटाक्ष मात्र से तुरन्त कुण्डलिनी उठ जाती है। गौरी की शक्ति विकसित होने से ही कैन्सर आदि सभी बीमारियाँ तुरन्त ठीक हो सकती हैं। सारी बुराइयाँ भाग जाती हैं और सब प्रकार की नकारात्मकता को वश में करते हुए आप एक सुन्दर, सुगन्धित कमल बन जाते हैं।

"वही शक्ति बनें।" तत्व को देखें, अपने अन्दर झाँके। आपके अन्दर छिपे हुए तत्व को सब लोग देखें। किसी मित्र, मंगेतर, पत्नी या पति की चिन्ता करना कोई उच्च स्थिति की बात नहीं। आपकी स्थिति बहुत नीची है और गिरती जा रही है। यह अच्छी बात नहीं है। मेरी करुणा और प्रेम यदि आपको बिगाड़ रहे हैं तो अच्छा होगा कि मैं यह सब आपको न दूँ। अपनी योग्यताओं के कारण ही आप इस देश में जन्मे हैं। महान ऊँचाइयाँ प्राप्त करने की योग्यता आप में है। आप इन्हें प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु इनके बारे में केवल बातचीत करने से यह प्राप्त न होगी, उसके लिए आपको वह महान शक्ति बनना होगा। अतः वह शक्ति बनें।

लोगों ने जो सामूहिक आशीर्वाद प्राप्त किये हैं उन्हें देखें। जब उन्होंने इनके बारे में मुझे बताया तो मुझे हैरानी हुई। उन्हें असीम आशीर्वाद मिले हैं। तो यहाँ पर आशीर्वाद क्यों नहीं प्राप्त कर सकते ? हमारे साथ क्या समस्या है ? यदि हम सामूहिक नहीं हैं, अगर हममें परस्पर कोई समस्या है, तो इसका मतलब यह है कि हमारे बीच में अभी भी एक प्रकार का अहम् है जो हमें सामूहिक नहीं होने दे रहा। अतः अब हम इस बात को अपने हृदय में उतारें कि, "परमात्मा की कृपा से हम ऐसे समय पर

जन्मे हैं जब यह घटना घटित हुई, कि हम लोगों को परमात्मा के आशीर्वाद का लाभ मिला, कि हमें आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हुआ और हम इतना ऊँचा उठ पाये। अब हमें अपने पंख फैलाने चाहिएं।

म्यूनिक में (अक्खड़पने के बाद) वो लोग गहन हो गये उनके बच्चे तक भी इतने गहन हो गये कि मेरे कहे हुए एक–एक शब्द को ऐसे सुनने लगे, मानो मोती चुन रहे हों। मेरे एक–एक शब्द को लिखने लगे। वे दृढ़ निश्चय वाले लोग हैं। यदि एक बार, उन्होंने अच्छे कार्य करने का निर्णय किया तो वे बहुत भले कार्य करेंगे। लेकिन यहाँ लंदन में मेरे जाते ही लोग काम–काज की बातें करने लगते हैं। मैं इसके बारे में सुनती हूँ और लहरियों आदि से जानती हूँ। हम गहन नहीं हैं, गहनता को बढ़ाना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसी को श्रद्धा कहते हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि इस वर्ष आप सहजयोग को गहनता पूर्वक समझेंगे। हो सकता है कि भूतकाल में आपके साथ कोई समस्या रही हो, आप बंधनों में फँसे हों या इसके बारे में बहुत अधिक सोचते हों। मैं यह कैसे कर सकती हूँ ? आप कर सकते हैं । आप ही अपने भूतकाल को भुला सकते हैं। सहजयोग में भूतकाल का कोई अर्थ नहीं होता। आपका पूर्ण नवीनीकरण हो रहा है, आप बस अपना तन्त्र उपयोग करें। आपके तन्त्र को ठीक रखने के लिए मैं आपके साथ बहुत परिश्रम करती हूँ। परन्तु आपमें आत्म विश्वास नहीं है और आत्मविश्वास की कमी जिसमें होती है वे बहुत अक्खड़ होते हैं। अतः सर्वप्रथम स्वयं को आत्मा में स्थापित करो, अपने हृदय के अन्दर, और अपनी शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न करो। अपनी आन्तरिक शक्तियों का, बोलने और दिखावा करने की शक्तियों का नहीं, आन्तरिक शक्तियों का।

हम अपने पंख काट रहे हैं। संकीर्ण बुद्धि व्यक्ति मत बनिए, छोटी मोटी चीज़ों की चिन्ता छोड़ दीजिए, ये सब महत्वहीन हैं। यदि आप अपने पूर्व जन्मों की ओर देखें तो आपको पता लगेगा की आप हर तरह के भोजन खा चुके हैं, हर तरह की यात्राएं कर चुके हैं। सभी प्रकार के विवाह करा चुके हैं जिनमें लोग अपना समय बर्बाद करते हैं। अब यह सब समाप्त हो चुका है। अब आप कोई नया कार्य करें। पूर्व जन्मों में आपके कितने विवाह हुए और आपने कितने आनन्द उठाए। अब इन्हें त्याग दीजिए। यह एक विशेष समय है। ऋतम्भरा का समय है जिसमें आपको विकसित होना है। इसका पूरा लाभ उठाना है। पूर्ण गहनता के साथ आपको सहजयोग करना है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि आप सभी अपनी नौकरियाँ छोड़ दो या सभी कुछ छोड़ दो। यदि आप सहजयोग में गहन हैं तो आप हर चीज़ में गहन होंगे। परन्तु आपमें गहनता नहीं हैं। शर्मनाक बात है कि परमात्मा के मन्दिर में अभी तक भी लोग बुरी चीज़ों से ग्रस्त हैं। यह कैसे हो सकता है ? वे बिल्कुल मौन रहते हैं या व्रत करते हैं। यह सब अनुशासन विहीनता है। आध्यात्मिक जीवन में ऊँचा उठने के लिए आपको चाहिए कि अपनी आत्मा से अनुशासन लें। तब आप स्वतः ही अनुशासित हो जाएंगे। आत्मा को स्वयं पर राज्य करने दें, यह सम्भव है। बहुत थोड़े से समय में मैने यह देखा है कि यह सम्भव है। मैं तो नाम भी नहीं जानती। पर यहाँ पर तो आप सबको आपके नामों से और आपकी चैतन्य लहरियों से जानती हूँ। और वे लोग इतने ऊँचे चले गये! आज का दिन एक महान दिन है एक महान अवसर है। हाऊस ऑफ लार्डज (राज्य सभा) कि तरह आप भी विशिष्ट व्यक्ति हैं।

यह सत्य है, परन्तु एक दिन ऐसा आ सकता है जब हाऊस ऑफ लार्डज़ को पूर्णतया निषिद्ध कर दिया जाएगा। आपको देवताओं की तरह व्यवहार करना होगा। अतः मेरी प्रार्थना है कि आप अनुशासनता की पूजा करना सीखें। मैं यह नहीं कहती कि 'ऐसा करें' 'ना करें', आप जानते हैं कि क्या करना है। और सबसे बड़ी बात यह है कि आप मुझे यह न कहा करें, "मैं जानता हूँ, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था ......" जब आप एक चीज़ को जानते हैं तो उसको करते क्यों नहीं ? आप शक्तिशाली हैं आज पूर्ण आत्मविश्वास के साथ और अपने उत्थान पर विश्वास के साथ, पूर्ण गहनतापूर्वक इस पूजा में भाग लें और अपने हृदय में निश्चय करें कि, "मैं स्वयं को अनुशासित करूंगा।" एक महान शक्ति के साथ नवरात्रि शुरु हो रही है। वेगशील चैतन्य लहरियों का लाभ उठाएं।

यह एक महान बात है कि इंग्लैंड में हम गौरी (वर्जिन) की पूजा कर रहे हैं। जैसा कि आप जानते हैं सहजयोग के अनुसार इंग्लैण्ड हृदय है जहाँ आत्मा (शिव) का निवास है और इंग्लैण्ड में गौरी का सम्मान तथा पूजा होना सभी सहजयोगियों के लिए बहुत सम्मान की बात है। अब आप पूछ सकते हैं गौरी को इतना सम्मान क्यों दिया जाता है ? एक कुमारी को इस सीमा तक सम्मान क्यों दिया जाता है। एक कुमारी की क्या शक्तियाँ है ? वह ईसा मसीह जैसे महान शिशु को जन्म दे सकती हैं, अपने शरीर के मल से वह श्रीगणेश की रचना कर सकती हैं और अपने अहम् विहीन बच्चों की अबोधिता तथा प्रगल्भता (गतिशीलता) की रक्षा कर सकती हैं। अतः यह शक्ति उसी व्यक्ति में निवास करती है जिसके बहुत से पूर्वपुण्य हों, जिसने पूर्व जन्मों में बहुत से अच्छे कार्य किए हों, जिसने यह समझ लिया हो कि कौमार्य अवस्था (पवित्रता) सभी शक्तियों से शक्तिशाली है और जिसने अपनी कौमार्य अवस्था और पवित्रता कि रक्षा जी जान से की हो। आप जानते हैं कि हमारे शरीर में गौरी कुण्डलिनी के रूप में स्थापित हो गयी हैं अर्थात् वे गौरी (वर्जिन) हैं। वह अछूती हैं। आत्मा बनने की इच्छा भी निर्मल है। उसमें कोई मल नहीं। वह शुद्ध इच्छा है। परमात्मा से एकाकारिता के सिवाय कोई और इच्छा नहीं, शेष सभी इच्छाएं समाप्त हो गयी हैं।

आप आशीर्वादित हैं। अतः शिकायत करने तथा आक्रामक होने के स्थान पर आप जान लें कि यह आप पर महान कृपा हुई है। महानतम कृपा कि आपको पूर्ण क्षमा दे दी गयी है और इस कृपा का आशीर्वाद आपको दे दिया गया है। इसके स्तर पर आने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। दोष भाव ग्रस्त हो कर नहीं, नम्र और कृतज्ञ होकर। अपने सारे कुकृत्यों के बावजूद भी आप देवताओं के समान बैठे हुए हैं। सोमरस (चरणामृत–श्री माताजी के चरण कमलों का धोवन) पीने की केवल आप लोगों, देवताओं को ही आज्ञा है। उस श्रेणी में आप बैठे हुए हैं फिर भी आप इतनी माँगे कैसे कर सकते हैं ?

आपमें से किसी में भी, स्त्री या पुरुष, मैं नहीं चाहती दोष भाव विकसित हों। यह मैं नहीं चाहती क्योंकि दोष भाव सबसे बड़ी बुराई है जो आगे चलकर आपको विपरीत दिशा में ले जाती है। इससे कोई सहायता नहीं मिलती। जब हमें यह पता चले कि यह समस्याएं हैं तो इनके प्रति नम्र हो जाना चाहिए। दोषभाव पूर्ण नहीं, नम्र। आप यदि सहजयोग के प्रति नम्र नहीं है और आक्रामकता पूर्वक कहते हैं कि आपको सहजयोग से क्या मिला और बिना

अपने पुण्यों को देखे इसकी शिकायत करते हैं तो आपको लाभान्वित होने का क्या अधिकार हैं ? आपकी सभी खामियों के बावजूद आपकी कुण्डलिनी उठा दी गयी। यह बात आप जानते हैं।

देवों की तरह आज–हम बैठे हुए हैं। आपको अपने आप को विनम्र करना होगा, अपने भूतकाल को, अपनी गलतियों को देखते हुए। इन कार्यों में मैं आपके साथ हूँ। दोषभाव ग्रस्त न हों। जैसे भी हम हैं हमें अपना सामना करना है। जब हम अपनी अबोधिता और कौमार्य अवस्था खो देते हैं तो सर्वप्रथम हम अहम् ग्रस्त हो जाते हैं और खोजने लगते हैं कि बुराई क्या है"? आपकी कुण्डलिनी ही आपकी शक्ति है और पवित्रता है। वही आपकी शक्ति है। अबोधिता ही आपकी शक्ति है और जिस दिन आपने इसे खो दिया उसी दिन हमने प्रथम पाप किया। अबोधिता के प्रति नम्र होकर कुछ प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। साम्राज्य और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन नहीं प्राप्त करना, शिव की इस पवित्र भूमि में स्थान प्राप्त करना है।

शिव क्षमा रूप हैं। वे सब को क्षमा कर देते हैं। राक्षसों को भी क्षमा कर देते हैं। राक्षसों को भी क्षमा किया जा सकता है, पर क्या उन्हें साक्षात्कार दिया जा सकता है ? पिशाचों (स्त्री राक्षसों) को भी क्षमा किया जा सकता हैं। लेकिन क्या उन्हें आत्म साक्षात्कार दिया जा सकता है ? क्षमा इसलिए दी जाती है कि शिव की क्षमा से वे अधिक समय तक जी सकें, पर उसका क्या लाभ है ? पर वह जीवन कितना दयनीय है! अबोधिता विहीन लोग आन्नद प्रदायक नहीं हो सकते। वे स्वयं दयनीय होते हैं और दूसरों को भी दुखी करते हैं। अक्खड़पना बालसुलभ गुण नहीं है। हमें बच्चों की तरह से होना है। परन्तु आप अबोध नहीं थे फिर भी आपको आत्म साक्षात्कार दिया गया। अब आप देवों के साथ बैठे हैं, उनसे भी ऊँचे। तो हमारी शोभा क्या है ? नम्रता, सादगी। चतुराई, अहंकार, दूसरों का अपमान और दिखावा हमें शोभा नहीं देते। पूर्ण समर्पण और अपने अहंकार का त्याग ही हमारी सज्जा है।

गौरी उन विचारों को स्वीकार नहीं कर सकती जो शाश्वत नहीं हैं। आपके अबोध बनते ही मनुष्य को मनुष्य से पृथक करने वाले सभी अवगुण जैसे धर्मान्धता, जातीयता और कौम का अहम् आदि सभी समाप्त हो जाते हैं। परन्तु व्यर्थ की बातों को अपने मस्तिष्क में स्थान देने से अबोध नहीं बन सकते। परन्तु इस अवस्था को बनाए रखने के लिए आपकी उन्नति आन्तरिक होनी चाहिए, बाह्य नहीं। अपनी जड़ों को खोजें, कुण्डलिनी आपका मूल है, आपके अस्तित्व की जड़ें है। वही आपकी नीव की अभिव्यक्ति करती है अतः आपका चित्त अपनी जड़ों की ओर होना चाहिए अपनी कोंपलों की ओर नहीं। अपना सामना करें और अब अपनी जड़ों को विकसित करें आप देख सकते हैं कि सारा पश्चिमी समाज आधारविहीन है। हमने सारी जड़ों को खो दिया है। आज क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो पश्चिमी होने के कारण, आइये हम इसका सामना करें। हमें अपनी जड़ों को खोजना है।

अपने अन्दर कौमार्य अवस्था को पुनर्जन्म लेने दें। आज का दिन हमारे लिए नववर्ष का दिन है। तो आज आप सबको शपथ लेनी होगी कि, "अपने भयंकर क्रोध, रौबीले स्वभाव, जोरदार आचरण, अहं चालित कठोरता एवं दूसरों पर प्रभुता जमाने की प्रवृत्ति का हम त्याग करेंगे।" मेरी समझ में नहीं आता कि इन दुर्गुणों का क्या लाभ है। जब तक आप इनका समर्पण नहीं करते तो गौरी एवं श्री

गणेश आपके आज्ञा चक्र को नहीं खोलेंगे। हमारे पूर्वकर्मों से हमें समझ आ जानी चाहिए कि हमें परस्पर दूसरे सहजयोगियों से नम्र, करुणामय, प्रेममय होना है तथा कितना शाश्वत हमें बनना है।

किसी जड़ विहीन पेड़ को देखिये। यह सूख जाता है, छाया नहीं देता और मृत सम होकर गिर जाता है। इस पर काँटे निकल आते हैं। यह उस मरुस्थल कि तरह हो जाता है जिसमें केवल कांटे ही उग सकते हैं। जब पूरा समाज इतना मूर्ख हो जाता है कि एक दूसरे से घृणा करने लगे और भौतिकतावादी बन जाए तो वहाँ कमल और गुलाब के फूल नहीं खिल सकते। परन्तु आप सब तो देश के कमल हैं। यह ठीक है कि आपने कीचड़ में जन्म लिया परन्तु अब स्वयं में लौट आइये। आप सुन्दर थे, कमलसम थे, कीचड़ में गिरकर कीचड़ जैसे हो गये, परन्तु अपने सच्चे स्वभाव के कारण आप उस कीचड़ से बाहर निकल आए हैं। आप कमल तो बन गये परन्तु सुगन्ध अभी भी नहीं है। सुगन्ध विहीन कमल की बात समझ में नहीं आती। कमल में तो सुगन्ध होनी ही चाहिए। वह सुगन्ध जो इस कीचड़ की गन्दगी पर छा जाए। आपको भारतीय सहजयोगियों से भी अधिक विकसित होना होगा। परन्तु यहाँ के लोगों की अक्खड़ता को देखकर तो मैं आश्चर्य चकित रह जाती हूँ। वे सदा शिकायतें ही करते हैं। वे स्वयं को क्या समझते हैं। आप कौन हैं ? जड़ों के विकसित न हो पाने की वजह से यह सब है।

एक बार जब आप अपनी जड़ों को विकसित कर लेंगे तो आपके स्वभाव में तुरन्त ही नम्रता आने लगेगी। अभी तक बनावटी नम्रता है जो कि हृदय से नहीं है। जब आप अबोध बन जाएंगे, पवित्र बन जाएंगे तब ये अस्वाभाविक नहीं रहेगी। अबोधिता का अर्थ केवल चरित्र से ही नहीं होता, इसका अर्थ अभौतिक दृष्टिकोण भी है। लोगों के लिए बच्चों से अधिक कालीन महत्वपूर्ण हैं। भौतिकता आप पर और आपकी अबोधिता पर आघात है।

अपने जीवन में मैंने देखा है कि वस्तु आदि आप किसी को भेंट कर सकें तो वह आपको अधिक आनन्द प्रदान करती है। देने में मुझे लेने से अधिक आनन्द आता है। आप भी ऐसा करके देखें। किसी चीज़ से पीछा छुड़ाने के मकसद से आप उसे उपहार में न दें। स्वामित्व–भाव दासता है। यह आपके उत्थान में बाधा है।

भौतिकता यदि अमृत से परिपूर्ण उस प्याले की तरह है जो प्रेमामृत प्रदान करता है तो ठीक है। परन्तु आप प्याले को तो नहीं खा लेते। भौतिकता से मुझे ऐसा लगता है जैसे लोग अमृत को छोड़ प्याले को खा लेते हैं। कप अधिक महत्वपूर्ण है या अमृत? सोने के प्याले में यदि विष भरा हुआ हो तो क्या आप उसे खा लेंगे ? क्या कोई जान बूझकर सोने के प्याले में जहर पी लेगा ? विवेक का अभाव है। अर्थशास्त्र का मूल–सिद्धान्त है कि भौतिक वस्तुएं आपको प्रसन्नता नहीं प्रदान कर सकतीं।

मेरी अबोधिता मुझे उन स्थानों पर ले जाती है जहाँ वस्तुएँ अत्यन्त सस्ती होती हैं। क्योंकि मैं इन्हें भेंट कर पाती हूँ इसलिए मुझे बहुत आनन्द मिलता है। आत्मा की वास्तविक शक्ति, कौमार्यावस्था (पावित्र्य) के अभाव के कारण ही आपने आनन्द विवेक खो दिया है। आप लोग आनन्द के हत्यारे हैं। सुबह से शाम तक अपनी जुबान से कठोर शब्द कह–कह कर आप एक–दूसरे के आनन्द की हत्या करते हैं। आपके सम्मुख हाथ जोड़ते हुए मुझे लगा कि कहीं इससे आप को दुःख न पहुँचे, इसलिए मैंने हाथ नीचे कर लिए। अपनी दोनों हथेलियों के बीच

मैंने, बड़ी सावधानी पूर्वक आपका हृदय पकड़ा हुआ था ताकि इसे चोट न पहुँचे।

जुबान से किसी को चोट पहुँचाते हुए व्यक्ति ये नहीं जानता कि वह अपने अन्दर घृणा की कितनी लहरियाँ बना रहा है। लोगों को प्रेम करने के लिए मुझे प्रतिदिन चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं। साठ वर्ष की आयु में भी मुझे लगता है कि मैं उतना प्रेम नहीं दे पाई जितना मुझे देना चाहिए था। प्रेम का बहाव इतना तेज है कि इससे मेरे शरीर में कष्ट हो जाता है और कभी–कभी तो मैं स्वयं को कोसती हूँ कि प्रेम का इतना अधिक वज़न मैं क्यों ढो रही हूँ। पूजा के बारे में सोचकर भी कई बार मुझे घबराहट होती है कि अब क्या होगा ? कभी कोई प्रश्न करता है कि "श्रीमाताजी क्या हम चैतन्य लहरियों को नहीं सोख पाये ?" यह स्पष्ट है पर मैं इसे कहना नहीं चाहती। क्योंकि यदि मैं ऐसा कहूँगी तो आपकी विशुद्धि पकड़ जाएगी। तब आप लहरियों को उतना भी नहीं सोख पाएंगे।

अब समय आ गया है। अपने सदाचरण से आप लोग ही परमात्मा का मस्तिष्क परिवर्तित करेंगे। क्रोधमय परमात्मा का। आप लोग ही उन्हें प्रसन्न करेंगे। इस पाश्चात्य विश्व में और कौन उसका अधिकारी होगा ? बाकी लोगों के हितार्थ करुणा के देवता को जागृत करने के लिए आप लोगों को विशेष रूप से चुना तथा तैयार किया गया है। सहजयोग प्रचार कार्य में अक्खड़पने का क्या परिणाम हुआ। एक कार्यक्रम में एक हज़ार लोग आये और अनुवर्ती (फोलो अप) कार्यक्रम में केवल तीन लोग। मैंने अपना बहुमूल्य समय अधिकतर इसी देश (इंग्लैंड) तथा पश्चिम में ही बिताया है। इसके बावजूद भी यहाँ का अहँकार मुझे आश्चर्य चकित कर देता है। इतना अहँ–भाव है कि कभी–कभी तो वे मेरे प्रति भी अक्खड़ होते हैं। मेरे साथ उनकी बातचीत तथा व्यवहार मुझे समझ नहीं आता।

मुझे अत्यन्त नाज़ुक कार्य करना है। आप पहले से ही ज़ख्मी लोग हैं क्योंकि आपने स्वयं को आहत किया है। किसी और ने आपको आहत नहीं किया। हर सम्भव तरीके से आपने स्वयं को चोट पहुँचायी। चोट के कारण आप में दोष भाव आ गया और अब आप दूसरों को आहत कर रहे हैं। स्वयं को चोट न पहुँचायें। दूसरों के प्रति कठोर होना आपका कार्य नहीं है। आपको मधुर एवं करुणामय होना होगा। मनोवैज्ञानिकों के बहकावे में न आयें कि यदि आप कठोर नहीं होंगे तो दूसरे लोग आपका अनुचित लाभ उठाएंगे।

पश्चिम के लोगों का कौन लाभ उठा सकता है जिन्होंने पूरे विश्व के साथ अन्याय किया है। यदि ऐसा कहें तो बड़ा विचित्र लगता है। उनकी बात मेरी समझ से बाहर है।

अक्खड़पन कहीं भी और कभी भी हो सकता है। बैल्जियम में मैंने पाया कि वहाँ गृहणियाँ बर्तानिया की गृहणियों से भी अधिक अक्खड़ हैं। बड़ी भयंकर स्त्रियाँ हैं। प्रेम–स्नेह का नितान्त अभाव है उनमें। हर समय भौतिकता का प्रदर्शन। अत्यन्त शुष्क स्वभाव हैं। पर वे आत्मसाक्षात्कार पा कर महान होना चाहती हैं। मैं उन्हें समझ नहीं पाती।

आज पवित्र्य का दिन है। मुझे इंग्लैंड की स्त्रियों से बहुत आशा है। पुरुष यहाँ बिल्कुल नहीं बोलते। बैल्जियम के पुरुषों का तो जैसे स्त्रियों ने गला ही घोट दिया हो। उस देश का अन्त क्या होगा ? पर वहाँ की स्त्रियों ने क्या पा लिया है ? यहाँ भारत में कम से कम एक स्त्री तो प्रधानमन्त्री है। वो क्या हैं। व्यर्थ, घर में बर्तन माँजती हैं और

हेकड़ी जताती हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि वे क्या त्याग कर सकती हैं।

सहजयोग में एक नया पृष्ठ खुल चुका है। इसके विषय में आपको चेतावनी देना आवश्यक है। सहजयोग से स्वतन्त्रता न लें। आप किसी और पर अहसान नहीं कर रहे। सावधान रहें। मेरी चेतावनियों को गम्भीरता पूर्वक लें। **आप सब को ठीक से विकसित होना होगा। केवल मेरी पूजा से लाभ न होगा। अच्छा हो कि अब आप अपनी पूजा करें। अपने अन्दर स्थित सभी देवताओं की आपको पूजा करनी होगी। उन्हें शुद्ध करें।** सर्वप्रथम नम्रता, अबोधिता तथा सहजता के देवी देवता हैं। उनकी पूजा करें। उनकी पूजा किए बिना आप आगे नहीं बढ़ सकते। आपकी रक्षा भी नहीं की जाएगी।

त्याग से ही स्त्री पहचानी जाती है। यह चुनौती है। आप सब आत्मसाक्षात्कारी स्त्रियों को मेरी सलाह है कि स्वयं को नम्र बनाएं। किसलिए आप हर बात पर जोर डालती हैं ? किसलिए? अहँ ग्रस्त तथा गलघोटू व्यक्तियों का गौरी पूजा कर पाना असम्भव है। गौरी अत्यन्त सहज हैं। अत्यन्त सहज। वह आपकी योजनाओं को नहीं समझतीं। उनका पवित्र्य ही उसका महत्व है। उसे वह जानती हैं तथा उस पवित्र्य को छूने की आज्ञा वे किसी को न देंगी। यही उनकी सम्पत्ति, वैभव तथा महानता है। वे नम्र हैं क्योंकि उन्हें किसी का भय नहीं है। वे आक्रामक नहीं हैं। वे किसी को आक्रामक नहीं होने देतीं। वास्तव में पवित्र स्त्री के प्रति आक्रामक होने का कोई दुःसाहस नहीं कर सकता।

मैं फिर कह रही हूँ कि सहजयोग से आज़ादी न लें। इसका दुरुपयोग न करें। इसने सारे आशीर्वाद आपको दिये हैं। सूर्य की रोशनी आपने देखली है, रात का सामना करने के लिए भी तैयार रहें। कोई भी आज़ादी लेने का प्रयत्न न करे। स्वयं को सुधारने का प्रयत्न करें। आश्रम में रहते हुए कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। आश्रम आपकी सुविधा के लिए नहीं है। समझ लें कि किसी को आपकी आवश्यकता नहीं है। यदि आप साधक हैं, अपनी जड़ों को खोजना चाहते हैं तो आपको स्वयं की आवश्यकता होनी चाहिए । आपके लिए सभी कुछ उपलब्ध है। परन्तु आपको नम्रता पूर्वक जड़ों में जाना होगा, अहँपूर्वक नहीं।

यह समझना हमारे लिए आवश्यक है कि हम उन्नति क्यों नहीं कर पा रहे। वास्तव में आत्म–विश्वास की कमी के कारण ही व्यक्ति अक्खड़ हो जाता है। जिनके 'आत्म' की अभिव्यक्ति नहीं हो रही उनका आत्म विश्वास लड़खड़ा जाता है। अपने 'स्व' की अभिव्यक्ति होने दें। आत्म अभिव्यक्ति के अभाव में ही सभी प्रकार की समस्याएं होती हैं और तब आप शिकायत करते हैं। ज़रा सोचिए कि जिस परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की , जिसने इतने प्रेम से आप सबको बनाया, आपको सब कुछ दिया, जिसने आपको आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया, आत्मा रूप में आपको प्रकाश दिया, हर सम्भव चीज़ दी, आप उसी की शिकायत कर रहे हैं! आप अपने बारे में शिकायत न करे कि "मैं ठीक नहीं हूँ, मुझे ठीक होना चाहिए।" अपना सामना करें।

बहुत से लोग जिन्हें आत्म–साक्षात्कार नहीं मिल पाता वे अत्यन्त गर्व से कहते हैं "मुझे कुछ नहीं अनुभव हुआ, माँ कुछ नहीं हैं।" उन्हें लज्जा आनी चाहिए कि उनमें कुछ कमी है। वह कमी ठीक होनी चाहिए। विवेक अबोधिता का एक हिस्सा है। ग्रामीण, सहज लोगों में पूर्ण विवेक मिलता है।

आप यदि उन्हें मूर्ख बनाने की कोशिश करें तो अन्त में आपको लगेगा कि " मैं स्वयं ही बहुत बड़ा मूर्ख हूँ।" कोई पढ़ा–लिखा व्यक्ति यदि किसी ग्रामीण को बेवकूफ बनाने का प्रयत्न करे तो वह पाएगा "कि पृथ्वी पर वह स्वयं सबसे बड़ा मूर्ख पैदा हुआ है।' विद्वान यदि नम्र नहीं तो उसे विद्वान नहीं कहा जा सकता।

आप अपनी आत्मा हैं, अतः स्वयं को आत्मा रूप में देखें। आत्मा शाश्वत है, अबोधिता है, आपके अन्तः स्थित गौरी है। इसका सम्मान करें, अपने अन्दर विद्यमान गौरी का सम्मान करें। यदि यह आपके अन्दर न होती तो मैं आपको आत्म साक्षात्कार कभी न देती। सारे आघातों के बावजूद भी यह अन्दर विद्यमान है। विश्वास करें कि इसके अस्तित्व के अभाव में आपको आत्म साक्षात्कार न मिल पाता।

सहजयोग प्रणाली (विद्या) में हम जितने पारंगत हों उतना ही नम्र हमें होना होगा। यही (नम्रता) हमारी सज्जा है, प्रमाण पत्र है तथा मानव अस्तित्व में प्रवेश–पथ है। अन्य साधकों के समीप जाने का यही मार्ग है। नम्र होना, नम्र होने की विधियाँ खोज निकालना ही 'निर्मल विद्या' की कुँजी है:"नम्र किस प्रकार हों?"

अबोधिता आपको आनन्द लेने की शक्ति प्रदान करती है। जैसे मुझे कभी भूतों के साथ खाना पड़ता है और कभी भूतों को खाना पड़ता है, जो कि बहुत कठिन है। अतः भूतबाधित लोगों का आप भी बुरा न मानें। यदि वे अक्खड़ हैं तो उन्हें बन्धन दें और इन सारी विधियों से उन्हें वश में करने का प्रयत्न करें। परन्तु यदि आप सोचें कि बहस करके आप उन्हें सम्भाल लेंगे तो असम्भव है। अतः निर्मल विद्या का उपयोग करें जो कि नम्रता है। जो चैतन्य लहरियों की मज्जक–ढाल है (Myclin Sheath)। हर नाड़ी पर जैसे मज्जक–ढाल होती है। इसी प्रकार नम्रता भी मज्जक–ढाल है। यदि आप नम्र हैं तो युद्ध जीत लेंगे, नहीं तो आप खो जाएंगे। यदि आप नम्र हैं तो सभी कुछ आपके लिए एक मज़ाक बन जाएगा। यदि आप नम्र हैं तो आप मूर्खों, भूतों तथा अक्खड़ लोगों को इस नाटक के विदूषक के रूप में देख सकते हैं।

तो अपने अन्दर गौरी की पूजा करें। अपने पावित्र्य की किरणरचित हीरे पर बैठने के लिए हम स्वयं को उन्नत करें। दूसरे लोगों से आप नाराज हो सकते हैं पर सहजयोगियों और मुझसे नहीं हो सकते। आवश्यक होने पर ही दूसरों से नाराज़ हो सकते हैं। परन्तु यदि आप परस्पर लड़ते हैं और दूसरों को सहजयोग के बारे में बताते हैं तो कोई आपका विश्वास नहीं करेगा।

अपनी आत्मा तथा मेरे साथ नम्र होने का प्रयास करें। मेरे प्रति नम्र होना अत्यन्त आवश्यक है। आपको समझना चाहिए कि ईसा ने आप पर 'सावधान' रहने की शर्त रखी है। मेरे से व्यवहार करते हुए किसी भी प्रकार से अभद्र न हों। इस मामले में मैं विवश हूँ। जब तक आप मेरे प्रति नम्र हैं सभी कुछ मेरे वश में होता है। पर आपके अभद्र होते ही कोई और, हज़ारों, बागडोर सम्भाल लेते हैं। तब आप मुझे दोष न दें। मेरे आश्रित होने के कारण आप मेरी सुरक्षा में हैं। **अपनी छत में सुराख करके यदि आप कहें कि अन्दर बारिश आ रही है तो मैं इसका क्या कर सकती हूँ** ? मेरा अभिप्राय यह है कि आप अपनी छत में छिद्र कर चुके हैं। अब तो अन्दर वर्षा आएगी ही। अब भी यदि आप कहें कि छत वर्षा से आपको बचाए तो मैं कहूँगी कि आपमें विवेक की कमी है। तो यह एक

अन्य चेतावनी है।

आज के दिन कुमारी गौरी ने शिव की पूजा शुरु की थी। एक शिवलिंग बनाकर वह उस पर अपना कुमकुम डाल रही थीं कि "मेरे आपसे मिलन के इस प्रतीक की आप देखभाल करें। इसका भार मैं आप पर छोड़ती हूँ"। "मैं आपके प्रति समर्पण करती हूँ, आप मेरी रक्षा करें"। इसी प्रकार गौरी, आपकी कुण्डलिनी, आत्मा के प्रति समर्पण करती है। **"अब आप इस योग की रक्षा करें। मैं शेष सब भूल जाती हूँ। इसे मैं आपके हाथों में सौंपती हूँ। मुझे ऊपर उठाइये, मुझे उन्नत कीजिए। अपने पुराने अस्तित्व को मैं भुलाती हूँ मैंने सभी कुछ छोड़ दिया। मेरी एक मात्र इच्छा है कि अधिकाधिक ऊँचा उठाइए। मुझे अपने में विलय दे दीजिए। बाकी सब महत्वहीन है। इस इच्छा की शेष सभी अभिव्यक्तियाँ समाप्त हो गई हैं। मेरी आत्मा, अब मैं पूर्णतया आपके प्रति समर्पित हूँ। मुझे और ऊँचा उठाइए, और ऊँचा, उन सब चीज़ों से दूर जो आत्मा न थी। मुझे पूर्ण आत्मा बना दीजिए, केवल आत्मा"।**

सभी कुछ भुला दीजिए। उस बुलन्दी, उस उत्थान को पाने की गति बहुत बढ़ जाती है। इसी क्षण और सदा, जो आत्मा नहीं है उसे यदि आप छोड़ दें तो आप ऐसा कर सकते हैं। आत्मा विरोधी चीज़ों को छोड़ना आवश्यक है। यही शुद्ध इच्छा है, यह कुण्डलिनी है, यही गौरी है। यही आत्मा से पूर्ण एकाकारिता है। बाकी सब सार हीन तथा व्यर्थ है। उत्थान ही महत्वपूर्ण है। आपकी जो सम्पत्ति हो, किसी से भी आप विवाहित हों, कहीं भी आप कार्य करते हों, किसी भी स्थिति में आप हों, आप किसी भी देश के हों– आप आत्मा हैं। यदि आप उन्नत हो जाते हैं तो आप परमात्मा के सुन्दर साम्राज्य में रहेंगे जहाँ सारी कुरूपता समाप्त हो जाती है जैसे कमल खिलने पर सारा कीचड़ झड़ जाता है। इसी प्रकार मेरे बच्चे भी श्री सदाशिव के सुन्दर चढ़ावे बनें।

मैंने भारतीय सहजयोगियों को बताया है कि वे पश्चिम के अहँचालित समाज की नकल न करें। वहाँ लोग कटु–शब्द उपयोग करते हैं। ऐसा करने से हमें लगता है कि हमनें अपना आधुनिकीकरण कर लिया है। वे कटु–शब्द उपयोग करते हैं, "मैं क्या चिन्ता करता हूँ"? इस प्रकार के वाक्य हमने कभी उपयोग नहीं किए। ये हमारे लिए अपरिचित हैं। किसी को ऐसा कहना अभद्रता है। आप किस प्रकार कह सकते हैं कि "मैं आप से घृणा करता हूँ।" लेकिन यहाँ मैंने लोगों को कटु–शब्द बोलते देखा है। हम इस प्रकार बात नहीं करते। यह बात करने का तरीका नहीं है। अच्छे परिवार का कोई भी व्यक्ति इस प्रकार नहीं बोल सकता क्योंकि इससे परिवार का पता चलता है। जिस प्रकार यहाँ बसों, टैक्सियों आदि में लोग बात करते हैं उस पर मुझे हैरानी होती है। अतः मैंने उनसे (भारतीयों से) कहा है कि भाषा प्रेम–मय तथा परम्परागत होनी चाहिए।

परमात्मा आपको धन्य करें।

जब आप ध्यान धारणा करते हैं
तो यह परमात्मा की ओर
आपकी व्यक्तिगत यात्रा होती है।

मॉस्को में, पूजा से पूर्व, एक सहजयोगी द्वारा खींचा गया यह फोटो आकाश में कुण्डलिनी को दर्शा रहा है।